वेद ईश्वरीय वाणी

वर्ष : 13 अंक: 2 अक्तूबर 2023 – मार्च 2024 अर्द्ध–वार्षिक

ओ३म् ओ३म्

''इन्द्र'' शब्द प्रभु के गुणों का द्योतक है

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषम्।। *(ऋग्वेद मन्त्र 1/18/6)*

मैं, साधक (इन्द्रस्य) सर्वशक्तिमान् परमात्मा, जो प्राणियों का सुखकारक (काम्यम्) जो उत्तम (सनिम्) कर्म फल दाता है (प्रियम्) हितकारी और (अद्भुतम्) अद्भुत है एवं (सदसस्पतिम्) जिसमें वेद ज्ञाता धार्मिक, न्यायप्रिय विद्वान् हों, ऐसी उस सभा के स्वामी, परम परमेश्वर की उपासना, स्तुति, प्रार्थना को प्राप्त करके (मेधाम्) वेद विद्या को धारण करने वाली बुद्धि को (अयासिषम्) प्राप्त हो जाऊँ। जो मनुष्य सर्वशक्तिमान् और सबको आनन्द देने वाले परमात्मा की उपासना करते हैं, वे ही कठिन परिश्रम करके विद्वान् होते हैं।

Vedic word 'Indra' symbolizes divine qualities of God

Those who worship the Almighty, pleasure giving, benevolent, amazing God, who gives the result of good and bad deeds; only they attain purest intellect and realize God.

वेद ईश्वरीय वाणी

मुद्रक, स्वामी एवं प्रकाशक
राज कुमार गुप्ता

संपादक
स्वामी राम स्वरूप 'योगाचार्य'
(01892236107)

सह संपादक
साध्वी गीतांजली
(01892236107)

उप-संपादक
सुप्रिया गन्दोत्रा
(9906092521)

प्रकाशन: शिवा एन्कलेव, लेन नं. -3, रूप नगर, जम्मू - 180013 (जम्मू व कश्मीर)

डी.डी. रिप्रोग्राफिक्स : 3-एकता आश्रम न्यू रिंहाड़ी, जम्मू -180005 (जम्मू व कश्मीर) से मुद्रित

ओ३म्

विषयानुक्रमणिका

ओ३म्

- 'इन्द्र' शब्द प्रभु के गुणों का द्योतक है..... ऋग्वेद मंत्र 1/18/6 1
- संपादकीय - ईश्वर से उत्पन्न वेदों को जानें .... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 3
- Beware of Enemies & Animosity .... Sadhvi Geetanjali 8
- Medical Science in Atharvaved 14
- श्रीमद्भगवद्गीता - एक वैदिक रहस्य .... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 15
- Who Am I .... Anoo Malhotra 17
- विद्वानों के संग से जाना-सत्य ज्ञान.... .... अंजना दिवान (इंडोनेशिया) 28
- Correspondence between Swami Ji & S. Khushwant Singh Ji 30
- विद्या, तप और दान .... ऋचा कौशिक मित्तल 33
- टी.बी. हारेगा देश जीतेगा .... डॉ. प्रवीण कुमार शर्मा 37
- Spirituality & Health .... Sapna Dogra 43
- मैं और मेरी लेखनी .... डॉ. वीना राज गुप्ता 47
- गुरु-शिष्य संवाद .... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 49
- पौर्णमासी और अमावस्या.... तिथियाँ 52
- प्रसुव यज्ञम् .... पी.आर.मेहरा 53
- Superstition .... Seema Dogra 57
- कौन ईश्वर को प्राप्त करता है- यजु. 40/4 .... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 61
- Mulethi .... Sugandh 'Sudhi' 64
- Subscription Form

संपादकीय

ईश्वर से उत्पन्न वेदों को जानें

अथर्ववेद काण्ड 8, सूक्त 9 में वर्णन है कि सत्त्व, रज एवं तम; इन प्रकृति के तीनों गुणों से यह जड़ जगत् उत्पन्न होता है। चौथा तत्त्व परमेश्वर है जो प्रकृति का अध्यक्ष (स्वामी) है। परमेश्वर ही से उत्पन्न चारों वेदों को परमेश्वर अनादिकाल से, हम जीवों के कल्याण के लिए, ऋषियों द्वारा वेद वाणी का ज्ञान देता आ रहा है। अतः हमें जिज्ञासु बनकर विद्वानों से वेद ज्ञान प्राप्त करके परमेश्वर को जानना चाहिए और मोक्ष का सुख प्राप्त करना चाहिए। यही जीवात्मा द्वारा मनुष्य शरीर धारण करने का लक्ष्य है। लक्ष्य से भटके मनुष्य को कभी सुख प्राप्त नहीं होता। यह जो जीवात्मा हमारे सबके शरीर में निवास करता है, यह जीवात्मा परमेश्वर का पुत्र है। जीवात्मा अपने पाँच ज्ञानेन्द्रियों, मन और बुद्धि द्वारा प्रकृति से बने पदार्थ एवं विषयों की ओर आकर्षित हो जाने से, अपने स्वरूप को भूल जाता है। यदि जीवात्मा विद्वान् आचार्य की शरण में रहकर वेद सुनता है, ज्ञान प्राप्त करता है और उस वेद विद्या को आचरण में लाता है, गृहस्थ के वेदों में कहे सब शुभ कर्म करता है तब जीवात्मा विषयों में नहीं भटकता और उसे मोक्ष का सुख प्राप्त होता है। अन्यथा यह जीवात्मा अविद्या ग्रस्त होकर बार–बार जन्म–मृत्यु अर्थात् प्रकृति चक्र में फंसकर भिन्न–भिन्न योनियों में भटकता रहता है और दुःखों के समुन्दर में गोते लगाता रहता है। ***योग शास्त्र सूत्र 2/5*** में उपदेश है कि अविद्या के चार स्वरूप हैं– ***''अनित्य को नित्य'', ''अपवित्र को पवित्र'', ''दुःख को सुख'', ''अनात्मा को आत्मा''*** जानना अविद्या है। अर्थात् ***1. जगत् नाशवान् है परंतु नाशवान् जगत् को अविनाशी समझना अविद्या है। 2. अपवित्र को पवित्र मानना अविद्या है। जैसे– इस शरीर में मल–मूत्र आदि भरा है परंतु हम इसे पवित्र मानते हैं। 3. दुःख में सुख समझना अविद्या है। जैसे कि ईश्वर भक्ति के बिना***

अर्थात् वेद ज्ञान के बिना मनुष्य दुःख भोगता है परंतु प्रकृति रचित संसार के पदार्थों, धन–दौलत, मोह–ममता आदि में फंसकर उसे इन्द्रियों का सुख मिलता है जो उसे चैन नहीं लेने देता, दुःखी रखता है। यह अविद्या है 4. अनात्मा में आत्मा की प्रतीति होना अविद्या है।

अविद्या के यह चार रूप जो कहे हैं इनमें से दुःख को सुख समझना; हम इस अविद्या के स्वरूप को थोड़ा सा जानें। उदाहरणार्थ संसार के सब भोग पदार्थ जिनमें हमें मोह है, ये दुःखदायी हैं। परंतु अविद्या वश हम यह सब सुख का साधन मान बैठे हैं। ***व्यास मुनि जी ने अविद्या को अमित्र शब्द के अर्थ के समान समझने को कहा है।*** जैसे हित चाहने वाले को हम मित्र कहते हैं और जो हमारा हित नहीं चाहता उसे हम अमित्र कहते हैं। इसी प्रकार विद्या हमारा हित करती है और अविद्या हित नहीं करती। परंतु जैसे वैदिक ज्ञान के अनुसार हमारा कोई अमित्र नहीं है। सब जीवात्माएँ एक सी हैं। जो हमारा हित नहीं चाहता वह हमारा अमित्र है परंतु शत्रु नहीं है। हमें ज्ञान होना चाहिए कि अमुक हमारा अमित्र है। अतः हमें अमित्र से बचना चाहिए। इसी प्रकार अविद्या का हमें ज्ञान होना चाहिए। अविद्या का क्या स्वरूप है, यह उपर कह दिया है कि दुःख को सुख समझना भी अविद्या है। अतः हम रहेंगे दुःखी क्योंकि मोह–ममता आदि अनेकों क्लेशों में लिप्त हैं परंतु दुःखी रहते हुए हम अविद्या ग्रस्त होकर अपने को सुखी मानेंगे। इसके लिए हमें वेद विद्या की आवश्यकता है। ***वेद विद्या के द्वारा ही हम समझने लगेंगे कि दुःख दुःख ही होता है, सुख सुख ही होता है। अतः हम दुःखों से दूर रहने का प्रयास करेंगे।***

उपर कही चार प्रकार की अविद्या ***तप, स्वाध्याय, ईश्वर भक्ति एवं योगाभ्यास*** से ही नाश हो प्राप्त होती हैं जो कि वर्तमान में प्रायः मनुष्य अविद्याग्रस्त होकर इस शिक्षा को ना ही जानता है और ना ही अनुसरण करता है। क्योंकि यह सब ज्ञान तो केवल अनादिकाल से ईश्वर प्रदत्त चार वेदों में ही है, अन्य कहीं नहीं।

वर्तमान के नर–नारी प्रायः वेद विद्या को सुनना तक पसंद नहीं करते। फलस्वरूप दुःखों के सागर में डूबे रहते हैं, चिंताग्रस्त रहते हैं, रोगी रहते हैं, मरते–मारते रहते हैं, दंगा–फसाद करते हैं और कब युद्ध छिड़ जाए अतः बारूद के ढेर पर बैठे हैं।

अत: आज मनुष्य को यह जानना अति आवश्यक है कि सत्य क्या है और असत्य क्या है। इसीलिए उसे विद्वानों के आश्रय में रहकर वेद विद्या प्राप्त करनी चाहिए। हम जीवात्माओं को यह जो मनुष्य रूपी सुन्दर शरीर नर–नारी के रूप में मिला है, इसका ध्येय, वेदों में कहे शुभ कर्म करते–करते, ईश्वर को प्राप्त करना है (देखें ***यजुर्वेद मन्त्र 40/2***)। मन्त्र कहता है कि जब कोई जिज्ञासु वैदिक कर्मों को अर्थात् वैदिक शुभकर्मों को करना प्रारम्भ करता है तब उसका स्वभाव बदलता है और वैदिक शुभ कर्म करने के कारण वह वेद विरोधी पाप कर्मों में लिप्त नहीं होता। वैदिक शुभ कर्मों को समझने के लिए हमें वेद वाणी के विषय में पूर्ण रूप से जानकारी प्राप्त करना अति आवश्यक है। इस विषय में ***यजु. मन्त्र 31/7*** में प्रभु ने कहा कि उस पूजनीय परमेश्वर से चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। ***अथर्ववेद मन्त्र 8/9/10*** में कहा है कि कोई बिरला ही ज्ञान को प्रकाशित करने वाली वेद वाणी के साथ प्रभु के सम्पर्क को जानता है। कोई बिरला ही वेद वाणी के अलौकिक प्रकाश को देखने में समर्थ होता है और कोई बिरला ही तपस्वी इस वेदवाणी के पवित्र निर्देशों को समझता है। कोई बिरला जिज्ञासु ही इसके सामर्थ्यों को जानता है और कोई बिरला ही इस वेदवाणी के तेज को जानता है जो हमारे अज्ञान और अन्धकार को दूर करती है। अत: प्रत्येक नर–नारी का यह कर्तव्य है कि वह ईश्वर से उत्पन्न वेदवाणी को सुनें और आचरण में लाए। अगले मन्त्र में उपदेश है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से उत्पन्न एवं चार ऋषियों के अन्दर प्रकट यह अमर वेद वाणी ही हमारे अज्ञान को दूर करती है।

अथर्ववेद मन्त्र 8/9/8 में कहा कि सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ कर्म, जो यज्ञ है, इसका बोध हमें वेदवाणियों से ही प्राप्त होता है। मन्त्र कहता है कि यदि हमें वेद–वाणियों का ज्ञान नहीं है, तब यज्ञ, जो हमें ब्रह्म प्राप्ति कराते हैं, वे यज्ञ भी लुप्त हो जाते हैं और मनुष्य वेद विरोधी, पाप युक्त कर्म करके भिन्न–भिन्न योनियों में, दु:खों के सागर में गोते लगाते रहते हैं अर्थात् सदा दु:खी रहते हैं। पिछले तीन युगों की भांति यदि वेदाध्ययन होता रहेगा, परिणाम स्वरूप ही यज्ञ भी हमारे जीवन में होते रहेंगे, मनुष्य जीवन सदा सुखी रहेगा; लोक–परलोक दोनों सदा सुखी रहेंगे। ***वेदवाणी के उपदेश द्वारा ही हमें प्रेरणा प्राप्त होती है फलस्वरूप हम यज्ञ आदि करते–करते परमेश्वर को प्राप्त कर लेते हैं। क्योंकि वेद वाणी का मुख्य विषय परमेश्वर है– परमेश्वर प्राप्ति कराना है। परमेश्वर प्राप्ति के पश्चात् ही जीव जन्म–मृत्यु से परे होकर सदा प्रभु के साथ आनन्द में रहता है।***

यहाँ यह स्मरण रहे कि यह जो कुछ ऊपर लिखा है और आगे भी जो कुछ लिखा जाएगा, वह सब ईश्वर से उत्पन्न, चारों वेदों से लिया ज्ञान ही है। और यही नहीं, यह जो हमारी और आप सब पाठकों की प्रिय पत्रिका ''वेद ईश्वरीय वाणी'' है, उसमें भी जो आज तक लिखा गया है, वह ईश्वर से उत्पन्न, चारों वेदों से लिया ज्ञान ही है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

याद रहे कि सृष्टि के आदि में ईश्वर से उत्पन्न वेद वाणी स्वतः प्रमाण है अर्थात् वेद वाणी के मन्त्रों के अर्थ–मनन आदि शत–प्रतिशत सत्य हैं परंतु मनुष्य से उत्पन्न वाणी के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है। जैसा कि पताञ्जलि योग दर्शन में कहा– प्रत्यक्ष, अनुमान एवं आगम; इन प्रमाणों से तर्क–वितर्क करके सत्य स्थापित किया जाता है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि वर्तमान में मनुष्यों से उत्पन्न वाणी को वेद–शास्त्र आदि का प्रमाण देना आवश्यक नहीं माना जा रहा कि मनुष्य की वाणी सत्य है या असत्य है। वेदों के ज्ञाता–विद्वान्; चारों वेद एवं ऋषियों के लिखे ६ शास्त्रों के प्रमाण के बिना, किसी भी वाणी को सत्य नहीं मानते।

दूसरा विचार यह है कि ईश्वर प्राप्ति के बिना सुख नहीं। तो प्रश्न उठता है कि ***ईश्वर किसको कहते हैं और उसकी उपासना कैसे की जाती है?*** ईश्वर को जानने एवं उसकी उपासना करने के लिए वेद की वाणी का प्रमाण आवश्यक है। तब यह सिद्ध होता है और ***वेदों में स्पष्ट कहा भी है कि ईश्वर वेदों में हैं, ईश्वर का अलौकिक ज्ञान, कर्म, स्वरूप एवं उपासना आदि का ईश्वर में स्वयं वेदों में वर्णन किया है, अन्य कहीं नहीं।*** हमारे पुरातन एवं नवीन ऋषि–मुनियों ने वेदाध्ययन, योगाभ्यास, ईश्वर नाम स्मरण, ब्रह्मचर्य आदि अनेक गुणों को धारण करके ईश्वर प्राप्ति की है। अन्य कहीं से नहीं। श्री राम एवं श्री कृष्ण महाराज, माता सीता आदि सबने पिछले युगों में वेदों को सुनकर और वेदों के निर्देशों को आचरण में लाकर ईश्वर प्राप्ति एवं परम सुख प्राप्त किया था। यह आश्चर्य है कि वर्तमान में हम श्री राम एवं श्री कृष्ण महाराज की पूजा करते हैं। परंतु त्रेता, द्वापर युग में जब ये महापुरुष थे, उस समय वेद विद्या के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं थी, कोई मत–मतान्तर नहीं था। केवल निराकार वेद ही सब राजा एवं प्रजाओं के द्वारा सेवनीय थे। इन्होंने केवल वेद अपनाए और महापुरुष से भी अधिक भगवान् कहलाए। तो हम सब जो इनके उपासक हैं, वे न जाने क्यों भ्रम में पड़कर, वेदों को कठिन आदि कहकर, वेदों को नहीं अपनाते, इस कारण प्रमाण विद्या को भी नहीं जानते और

अविद्या को प्राप्त करके सदा दु:खी रहते हैं। वर्तमान के नर–नारी अनादि और अविनाशी सत्त्व, रज एवं तम गुणों वाली जड़ प्रकृति की उपासना करते हैं और क्योंकि वे जड़ प्रकृति की उपासना करते हैं तो ***यजुर्वेद मंत्र 40/9*** के अनुसार अज्ञान में प्रवेश कर जाते हैं और सदा दु:खी रहते हैं। और अन्य नर–नारी वे हैं जो प्रकृति से उत्पन्न हुए जगत् में रत हैं और प्रकृति की पूजा करने वालों से अधिक अविद्या रूपी अन्धकार में प्रवेश करके सदा दु:खी रहते हैं। भाव है कि प्रकृति से उत्पन्न हुए पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमा, आकाश आदि अनेक स्थूल पदार्थ एवं उत्पन्न कार्य जगत् की उपासना करते हैं, अर्थात् कार्य जगत् में जो सोना–चांदी, रुपया–पैसा, शरीर का आकर्षण आदि अनेक तत्त्व हैं, उनमें ही रमण करते हैं; पैसा–पैसा–पैसा करते थकते नहीं हैं और वेदों द्वारा ईश्वर को जानने का प्रयत्न ही नहीं करते, जिसके लिए यह मानव शरीर मिला है; तो ईश्वर ने ऐसे नर–नारियों के लिए ***यजुर्वेद मन्त्र 40/9*** में स्पष्ट कहा है कि ऐसे नर–नारी घोर अविद्या को प्राप्त होकर सदा दु:खी रहते हैं। इसलिए मनुष्य अभी भी चेते और अपने पूर्वज ऋषि–मुनि, श्रीराम, श्री कृष्ण आदि जो वेदों का ज्ञान देकर चले गए, उन्हीं के पद–चिन्हों पर चलकर, वेदों को अपनाकर, आचरण में लाकर सदा सुखी रहें और परिवार को भी सुखी रखें। वेदों को जानने के लिए ईश्वर की आज्ञा है कि सब वेदों के ज्ञाता, अष्टाँग योग विद्या के ज्ञाता, किसी तपस्वी के आश्रय में रहकर वेद विद्या को प्राप्त करें। अंत में मैं ईश्वर का, ***अथर्ववेद मन्त्र 11/2/31*** में दिया हुआ उपदेश लिखना चाहूंगा जो इस प्रकार है–

- हे प्रभु! आप से प्रेरित वेद वाणियों की घोषणा करने वाली और आपका स्मरण करने वाली प्रजाओं के लिए हम नम्न होते हैं– नमस्कार करते हैं।
- हे प्रभु! आपको प्रणाम करने वाली प्रजाओं को हम प्रणाम करते हैं।
- प्रेमपूर्वक मिलकर भोजन करने वाली प्रजाओं को हम प्रणाम करते हैं। (ऋग्वेद में एवं श्रीमद् भगवदगीता में कहा कि जो अकेला खाता है अधिकारी को दान आदि नहीं करता वह पाप खाता है।)
- संसार को सब कुछ देने वाले परमात्मा, आपको सदा स्मरण (नाम स्मरण) करने वाली प्रजाओं को हमारा नमस्कार है। हे प्रभु! हमें भी कल्याण एवं निर्भयता प्राप्त हो।

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

मुख्य सम्पादक

वेद मन्दिर, योल (हि.प्र.)

BEWARE... OF Enemies AND ANIMOSITY

Sadhvi Geetanjali
Ved Mandir, Yol, H.P.

Vedas are the perennial source of knowledge which articulate our way of living according to the divine preach of God.

God preaches in ***Atharvaved Mantra 7/27/1*** that divine Vedas inspire us to do pious/ auspicious deeds so as to lead a pure life, devoid of sins.

Vedas, the divine voice of God, also carry a prayer in ***Atharvaved Mantra 8/3/24,*** to be orated by the aspirant, with all his sincerity to God that Oh! (Agni) omnipresent God, You (Adeveehee Durevaha Mayaha Pra Sahtey) annihilate the wicked and evil thoughts of mind. You alone inspire the aspirant to enhance his Vedic knowledge along with pious deeds for complete destruction of evil nature of human-beings including animosity, revengefulness, selfishness, hypocrisy and so on. At this point of time, comes the dire necessity of learned Acharya of Vedas and ashtang Yog philosophy who through his Vedic preach [God being formless enables the Rishis to preach Vedas] cleverly removes these

impediments of vices, festering the mind of aspirant. Acharya alone elevates the aspirant to Dev yoni paving his way to realization of God.

It is pertinent to mention here that such is the greatness and magnanimity of Rishis that they not only relentlessly work for the serenity, peace and happiness of contemporary aspirants but also through their writings explain the realised deep knowledge of Vedas in much simpler and understandable way. Their literature enshrines secrets of Vedic knowledge to ensure welfare of future generations as well.

Since the time, we have distanced ourselves from the ambrosial shelter of learned Acharya of Vedas and their Vedic literature consequently virtues and pious qualities have also drifted far apart from our personalities. In this context let us dwell deeply over the Mahabharata Epic written in Dwapur.

Mahabharat is the finest treatise of Vyas Muni ji-- illuminating the Vedic principles beautifully and symbolically through stories and events. Vyas Muni ji educates in Shanti Parv, 36th chapter about basic Vedic teachings guiding the administrator regarding Governance of country.

In this context, ***Yudhishthir asks Bheeshma to justify his advice that -***

"Never trust an enemy and drift apart from animosity".

Bheeshma does so by orating sapient story to Yudhishthir about a ***sparrow named Poojani,*** who thrived happily under the shelter of ***Maharaj Brahmadutt,*** (ruler of Kampilya Kingdom) in his palace.

One day Sparrow gave birth to a chick and on the same day a prince was born to the king as well. Every day the grateful sparrow covered long distances and got one fruit each for the two children. Prince became quite strong and sturdy after eating that nutritious fruit every day.

One fatal day, a nurse was carrying the little prince in her lap when the prince saw the small, tender chick and started playing with him. All of a sudden prince took the chick to an isolated place and killed him (chick) and again returned back to nurse's lap.

When the sparrow returned, she was shocked with grief to see her child lying dead on ground, after being killed by the prince. Being distressed with grief and

sorrow, she said ***"The prince is extremely cruel, thankless and treacherous. I will avenge this loss of my child".*** After saying this she gnawed the eyes of prince with her claws and blinded him. Sparrow said--- "Bad deeds surely meet with ugly end."

When the king came to know all about the fateful event, he said to Poojani, "My son did an irreparable damage to you and you avenged that loss. Now, we both stand on the same pedestal. So, let's forget each other's loss and start afresh. Oh! Poojani do not leave the palace and continue to stay here with us.

Poojani wisely opined---

"Due to your son's sins, an animosity has developed between us. In the eyes of learned, it shall be foolish for me to stay here anymore". She added,

Animosity develops due to five reasons–

i) For a woman.

ii) For house and land-property.

iii) Due to acid tongue- bad words hurdled on someone.

iv) Due to hatred and jealousy.

v) For any harm or wrong done to someone at some point of time."

Poojani further added---

❖"Even such friend, who due to some or other reason, has harboured animosity towards you, he also can never be trusted. Just like the wood hiding fire ambers within it, such person who conceals animosity and hatred within his heart against you, can prove to be dangerous for you and strike you unawares."

❖"Just as the entire sea fails to extinguish the fire outburst in a submarine similarly the fierce and ruthless fire of anger can't be pacified by any amount of wealth, sweet speech or preach on Dharma."

❖"One should wisely drift far away from unchaste lady, disobedient son, unjust king, treacherous friend and hidden enemy."

- "Wicked and unfilial son, should never be trusted, cruel king can never give peace to his subjects."
- "She, only is the wife who is sweet spoken, he only is the son who can give happiness to his parents, he only is the friend who is trustworthy and bears no animosity."

After preaching the King Brahmadutt to be vigilant against enemies, Poojani flew away to some other congenial habitat.

Vyas Muni ji gives the Vedic message to the readers to be alert from enemies. The Epic hints at two types of enemies---

1. Corporal Enemies of outside world.

2. Vices like anger, greed, sensuality, hypocrisy and so on which are subtle enemies degenerating and destroying the inner fabric of soul. Infact Yaksh asks Yudhishthir in Van Parv, 24th chapter of Mahabharat as to-

"Who is the formidable enemy of human beings."

Yudhishthir replies-

"Anger is the formidable enemy of a human being."

The words hurled in anger and in insulting manner are like hot lava that flows from burning volcano destroying every living being in its way.

We should bear in mind that the outside corporal enemies can be countered by Yajyen and precious blessings of learned Rishis bestowed on worthy aspirants. Learned Acharya enables the aspirants to imbibe and incorporate teachings of various Vedic mantras in their daily lives. For example—

Samved Mantra 104

"Na tasya mayaya cha na ripureesheet martyaha,
Yo agnaye dadaash havyadaatye"

The essence of above Samved Mantra is that neither illusion, (including wickedness, animosity, hypocrisy and so on) nor enemies can harm an aspirant armoured by pious effect of aahuties offered in burning fire of Yajyen and pious deeds done under the shelter of learned.

As far as inner subtle enemies i.e., vices like anger, animosity, greed, sensuality, hypocrisy and so on are concerned, they are destroyed by wielding austerity.

Austerity is explicitly defined in ***Shanti Parv of Mahabharat by Vyas Muni ji,*** he says, austerity implies--- not to bear animosity towards anyone, speak truth, shun cruelty, be kind and exercise control over senses.

Let us also dwell on Vidur Niti in this regard---

Vidur Niti shlok 7/42 states forgiveness annihilates anger. Further ***Vidur educates in shlok 4/5*** that he who does not abuse in return the person, who has abused him, is indeed revered soul on the earth. Infact anger controlled by the person who has forgiven, incinerates i.e., reduces to ashes the person who has abused him. Therefore, Vedic knowledge enables us to exploit our infinite potential.

I personally feel that if we rise above animosity and whither the feeling of hatred towards enemies, we are rather lucky because this positivity takes us to spiritual depths whereas if the other clings to vindictiveness, he remains superficial forever. We surely create eternal blissful treasures for ourselves while the culprit greases his own wheels of downfall.

Last but not the least, may I also avail the privilege to claim that I am amongst thousand's of blessed souls who thrive in protective shelter of HIS HOLINESS SWAMI RAM SWARUP JI, He relentlessly strives to motivate devotees towards Vedic path bringing sunshine into their lives by shielding them from all kinds of enemies- both outer and inner.

He wisely opines that since the sun of knowledge of Vedas has hidden behind the shadow of illusion, various sins and vices have engulfed the society.

I proudly acknowledge that ***His Holiness is the Armour/Varma in Sanskrit and Kavacha in Hindi*** of all his disciples, insulating them from enemies both corporal and subtle, through his divine radiance and commendable knowledge of Vedas.

There is a heart-rendering prayer to God in ***Atharvaved mantra 8/4/17*** that--- ***Oh! God if I poison anyone's life then I deserve to die. It is better to die than live a sinful life. Hence, may I be blessed to lead a pious life without causing bitterness in others life.***

Further insight by the Editor

Vyas Muni ji in the explanation of ***Yog Shastra Sutra 2/5*** states that ignorance/illusion is not the friend of human-beings. Just like the one who wants our interest is called friend and the one who does not want our interest is called unfriendly. Knowledge benefits us and ignorance/illusion does not give us any benefit. It is also necessary to understand that how many men and women live in the world, not all of them want our welfare. So, they are not our friends. Like unfriendly is not our enemy but we should know that so and so is not our friend and we may save ourselves from them. In the same way, we should have the knowledge of illusion, which is not our friend, so that we may save ourselves from illusion. Whenever we will be in a position to know the bad qualities of illusion, automatically we will remain away from illusion.

There are four forms of illusion---
i). To understand a matter as immortal whereas actually that matter is mortal.
ii). To understand an impure matter as pure.
iii). To know sorrowful matters as pleasure-giving.
iv). To consider destructible matters as Indestructible

For example—

- ❖ Alive God and souls as well as non-alive Prakriti, these three are eternal and indestructible matters. Apart from the said three matters, the whole creation is non-alive and destructible. The person who considers vice-versa is involved in illusion.
- ❖ The human body is full of waste faecal matter, bones, sweat etc. If it is not cleansed with water every day, foul smell starts coming from it. However, males and females, who are indulged in illusion, think that the bodies of opposite gender are beautiful and pleasure-giving. See, this is called illusion. Similarly, to tell lies is sin but normally a person, who is habitual of telling lies, thinks that to tell lie is pious deed. This is called illusion.
- ❖ On one side a person states that his body is destructible but on the other side the person when sees the corpse going towards final resting place, he thinks that it is only the corpse which is dead but he will never die. This is illusion.
- ❖ All the enjoyments of the world, with which we are attached, are painful but out of ignorance, we have considered all these as means of happiness. This is called illusion.

Illusion is not our friend therefore, we should save/protect ourselves from it.

Here the necessity of explaining Yog Shastra is that--

1). Sadhvi Geetanjali is throwing light over Illusion and knowledge.

2). Similarly, Vyas Muni ji also states about Illusion and knowledge. Further, Vyas Muni Ji also clarifies that illusion is not our friend therefore, we must save ourselves from illusion. Instead, we should be learned men and women.

Sadhvi Geetanjali has very well explained in her article about corporal enemy as well as hidden foe. Here illusion is our enemy. Therefore, to understand it and to know the means to remain away from illusion, traditionally it is most important for us to seek the shelter of learned Acharya of Vedas and Ashtang Yog philosophy.

We should be able to know by all means that to destroy illusion, corporal and hidden enemies, know Vedas' knowledge, ashtang yog philosophy and worship of God, there is no other way but to seek the shelter of learned Acharya of Vedas.

VIV

Medical Science in Atharvaved

There is a basic principle known by acharya from the Vedas that knowledge can only be gained when some other learned Rishi gives. Based on the said eternal principle, God, in the beginning of the creation, when no teacher/guru was there to preach any type of knowledge to human beings, He Himself i.e., God becomes Guru of the Four Rishis. So, this eternal truth is mentioned in Patanjali Yog Shastra sutra 1/26.

Knowledge from straw to Braham emanates in the form of four Vedas, which also includes the knowledge of medical science for the benefit of human beings. Through our magazine, named Ved Ishwareeya Vaanni, we try to spread the knowledge of Medical science for the benefit of all human beings. In this connection, Atharvaveda mantra 3/8/1 preaches that the shinning sun protects us from several diseases and increases our life span. So, the rays of sun pervade all over the earth which results in creating all seasons timely and destroys natural disasters. This is the reason, Ayurvedic doctors must be consulted about the benefit of rays of sun and accordingly enjoy the health benefit of sunrays.

VIV

श्रीमद्भगवद्गीता

(एक वैदिक रहस्य)

गतांग से आगे.... *स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'*

(भारत) हे धृतराष्ट्र (गुडाकेशेन) अर्जुन के द्वारा (एवं) इस प्रकार (उक्त:) कहे हुए (हृषीकेश:) योगेश्वर श्री कृष्ण (सेनयो: उभयो:) दोनों सेनाओं के (मध्ये) बीच में (रथोत्तमम्) उत्तम रथ को (स्थापयित्वा) स्थापित करके।

अर्थ:– हे धृतराष्ट्र! अर्जुन के द्वारा इस प्रकार कहे हुए योगेश्वर श्री कृष्ण दोनों सेनाओं के बीच में उत्तम रथ को स्थापित करके।

'भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति।।' (गीता 1/25)

(भीष्मद्रोणप्रमुखत:) भीष्म और द्रोणाचार्य के सामने (च) और (सर्वेषाम्) संपूर्ण (महीक्षिताम्) राजाओं के सामने (इति उवाच) ऐसे कहा (पार्थ) हे अर्जुन! (एतान्) इन (समवेतान्) एकत्र हुए (कुरून्) कौरवों को (पश्य) देख।

अर्थ:– भीष्म और द्रोणाचार्य के सामने और संपूर्ण राजाओं के सामने ऐसे कहा, हे अर्जुन! इन एकत्र हुए कौरवों को देख।

भावार्थ:– ऊपर श्लोक 24 में अर्जुन को गुड़ाकेश (गुड़ाका+ईश) कहा है। 'गुड़ाका' का अर्थ निद्रा और 'ईश' का अर्थ स्वामी है। अत: गुड़ाकेश का अर्थ है निद्रा को जीतने वाला। ***योग शास्त्र का सूत्र 1/6*** देखें–***'प्रमाणविपर्यय विकल्पनिद्रास्मृतयः'*** अर्थात् पाँच प्रकार की वृत्तियों में निद्रा को भी पतांजलि ऋषि ने योग–शास्त्र में क्लिष्ट अथवा अक्लिष्ट, चित्त की दो प्रकार की वृत्ति कही है। क्लिष्ट वह जो दु:ख देती है, अक्लिष्ट वह जो सुख देती है। जब शारीरिक सुख एवं काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकारादि से ग्रस्त प्राणी खाता–पिता सोता है, तब ऐसी क्लिष्ट चित्त की निद्रा वृत्ति आयु घटाने वाली, रोग, परेशानियाँ इत्यादि को बढ़ाने वाली होती है और जब स्वप्न रहित गहन निद्रा में हम सोते हैं और संसार के पदार्थ, परिवार तथा अपना शरीर आदि सब कुछ भूल जाते हैं, तब यदि इस प्रकार सब कुछ भूलने का ज्ञान जाग्रत में भी बना रहे तो यह निद्रा वृत्ति मोक्ष तक का सुख देने वाली होती है। क्योंकि ***सूत्र***

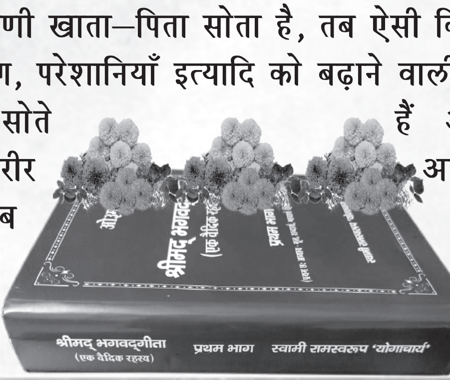

1/10 में कहा ***''अभावप्रत्ययाऽलम्बना वृत्तिर्निद्रा''*** अर्थात् अभाव के ज्ञान का आलम्बन करने वाली चित्त की निद्रा वृत्ति है। अर्थात् गहरी नींद में हमें संसार आदि का कोई ज्ञान नहीं होता परंतु निद्रा से जागने पर यह ज्ञान होता है कि हमें बहुत अच्छी नींद आई। यह ***''अभाव–ज्ञान''*** है। संसार की जन्म–मृत्यु एवं पेड़–पौधों आदि का बनाना–बिगड़ना देखकर यदि साधक को वैराग्य हो जाए और वह जाग्रत में भी निद्रा वृत्ति के समान संसार के अभाव का ज्ञान अनुभव करने लगे तो यह निद्रा वृत्ति का ज्ञान अक्लिष्ट होकर सुखदायी होता है। अर्जुन ने इसी प्रकार निद्रा को जीता हुआ था।

महाभारत में वर्णन आता है कि अर्धरात्रि के समय सोते हुए आचार्य द्रोण को कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। उन्होंने उठकर देखा कि पाँचों पाण्डवों में से चार भाई गहन निद्रा में सोए हुए हैं और अर्जुन बाहर तीर चलाने का अभ्यास कर रहा है। यह देख द्रोणाचार्य ने अर्जुन को गले लगा लिया था।

आज ब्रह्मचर्य आदि वैदिक शिक्षा के अभाव और प्राय: सात्विक भोजन न होने के कारण प्रात: चार बजे तो कोई विरला ही विद्यार्थी उठकर साधना, स्वाध्याय इत्यादि करता है। अथवा गृहस्थी ईश्वर का ध्यान इत्यादि करता है। हमें प्रात: काल उठने की परम्परा दोहरानी होगी। ***सामवेद मंत्र 1826*** स्पष्ट कहता है, कि जो प्रात: काल उठकर वेदाध्ययन, ध्यान इत्यादि करता है, ईश्वर स्वयं उसका सखा हो जाता है। वेदों में कहा यह ***'गुड़ाकेश'*** शब्द केवल कथाओं में ही नहीं सुनना, अपितु आज भी आचरण में होना आवश्यक है। दूसरा शब्द ***'हृषीकेश'*** है जिसका अर्थ इन्द्रियों का स्वामी है जो पिछले लेखों में विस्तार से कहा है। यह शब्द श्रीकृष्ण के लिए है। संपूर्ण गीता में श्रीकृष्ण योगेश्वर तथा एक महान् विभूति के रूप में जाने जाते हैं अपितु संपूर्ण महाभारत में भी वह ब्रह्मचर्य आदि गुणों की खान है। अत: पुराण आदि में इन गुणों के विरोध में श्री कृष्ण की सोलह हजार एक सौ आठ रानियों से विवाह, स्नान करती कन्याओं के वस्त्र उठाना आदि घटनाएँ प्रामाणिक सी नहीं लगती। भगवद्गीता महाभारत के ***'भीष्म पर्व'*** का अंश है जो करीब पाँच हजार वर्ष पहले लिखी गई है। इससे पूर्व केवल वाल्मीकि रामायण ही त्रेतायुग में लिखी थी। महाभारत काल में छ: शास्त्र आदि वैदिक वाङ्मय लिखे जा रहे थे। परंतु इस समय पवित्र बाइबिल, कुरआन शरीफ, तुलसीकृत रामायण और संतों बुद्ध, जैन की वाणी इत्यादि लिखी नहीं गई थी। वह केवल वैदिक काल था। अठारह पुराणों के रचना का समय विद्वानों ने राजा भोज के राज्य का समय माना है। अत: गीता के ऐसे–ऐसे मार्मिक शब्द हमें वेदानुसार ग्रहण करने योग्य हैं।

(क्रमश:)

Anoo Malhotra
Secretary
Social Welfare Department (J&K)

I often stand before the mirror, sometimes appreciating my looks and at other times, frowning over my wrinkles, tanned complexion and greyness peeping from the roots of my hair which I love once they are groomed after touch ups and blow dry.

Oh ! what a sense of confidence I feel within myself , once I am comforted with my improved looks While I follow this routine , many a times I feel upset with my own self and my mental aptitude which keeps focusing on hands , toes , hair , skin , looks and appearances .

Is this actually "ME".

Am I only a collection of long and short bones covered by skin, beautified by black eyes , shining nose ,rosy lips, blushed cheeks , sparkling chin further handled by arms, legs , knees , hands and feet.

→ **"NO THIS CAN'T BE ME !!** I am sure I am not this ! I can't be a mere lump of skin covering this bony skeleton !"

→ **WHAT HAPPENS TO ME ONCE THIS BODY BECOMES LIFELESS?** Is that the end of me – the proud me?

→ **HAVE I BEEN CREATED BY THE ALMIGHTY TO SPEND A FEW YEARS AND GO OFF . SURELY THIS BODY CAN'T BE ACTUAL ME?**

This body certainly has something in it which keeps it going, definitely it has something which makes it breathe,walk,eat,run,sleep, rise and when that thing does its karma by means of the body in which it resides as also is subjected to happiness / sadness as per the earlier karmas , it leaves this body thus rendering it lifeless.

Why am I forgetting about the words of the **SUFI SAINT BULLE SHAH JI** often

refered by my **revered yogacharya SWAMI RAM SWARUP JI**

'BULLEYA KI JAANA MAI KAUN'

Definitely the great sufi saint who had deep understanding of GOD and LIFE wasn't that ignorant. Was he so confused that he kept asking himself and public that he really did not know who he was? OR

Was he looking for something?

What did he mean when he said that

NA MAI AADAM HAVVA JAAYA
NA KOI APNA NAAM DHARAYA
AVVAL AKHIR AAP NU JAANA
NA KOI DOOJA HOR PEHCHANNA
NA MAI JAAGAN NA WICH SAUN
NA MAI AATISH NA MAI PAUN

The beautiful words definitely hint at the philosophy of realizing self . He definitely wants to tell us that he is not made up of water , air and heat nor he is the biological son of any parents.

He very well means to tell this whole world that there is something which is neither created nor destroyed and that is not made of air ,water or fire . Neither does that thing sleep nor it wakes up.

BULLEH SHAH JI wanted to share his experience with this whole world that we are not mere body made of cells nor do we belong to any religion. This body of ours is neither good nor bad . He further wishes to tell this world that there is an urgent need to find out who we are. ***If we are not body then what actually we are?*** Listening to vedas from my learned acharya has taught me that if I want to know my true self I need to understand with my whole heart and attention the voice of GOD, **THE ETERNAL VEDAS** which are the storehouse of all sorts of knowledge .

Continuous listening to vedas from my acharya I have slighthly understood that it is the **'jivatma'**, the soul which is within us and keeps this body going and once it gets out of this body ,the body which we think are' we' becomes lifeless.

The Soul which is actual ME has somehow escaped mine and your attention. it enters into the body at the time of its formation and gives the pleasure of life thus bringing it into the category of living being. ***The basic character of***

jivatma is that it is chetan (living) and this character of it makes our body alive and once it leaves our body it is rendered lifeless.

Further, great **KABIR DAS JI** has also spelt out few these lines which I keep hearing and understanding from **my learned ACHARYA SWAMI RAM SWARUP JI YOGACHARYA :**

Re santo kaahin aawe se kaahin jaawe bole che ji ki khabar nahi…..
Paani ka sa bana budbuda bhayo aadmi naam
Bheja tha hari bhajan ko to basa liya ek gaanv …

The great saint hints at the chetan jivatma (soul) and says no one knows from where does it come in our body and where does it go once we die.

He further explains that this ***soul enters into our body for the one and only purpose which is to realise the only truth ie GOD*** but once the jivatma enters into the body it gets overshadowed by the worldly pleasures , it deviates from its real self and forgets its basic essence and the purpose of coming in this world.

The basic purpose of this life is to realise our true self and uplift our soul by following vedas while keeping our body healthy and taking care of it because it is in this body that the soul resides. ***It is important that the jivatma resides in a body which is healthy enough to do sadhna, yagya for attainment of eternal peace and attain the ultimate truth.*** These practices are part of ashtang yog and ashtang yog is the practice which we need to adapt ,follow and learn from the learned acharya .

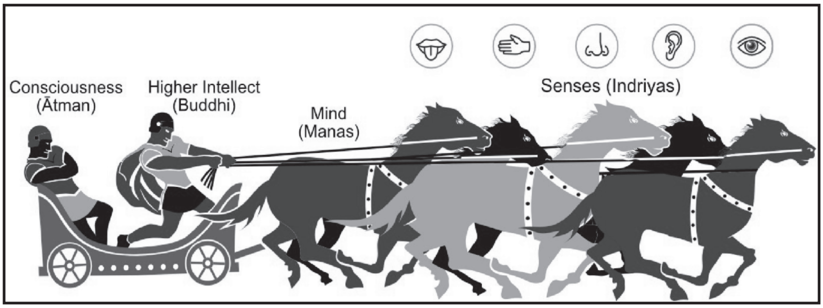

Verses 1.3.3-11 of katho Upanishad equates body to a chariot where horses are the senses, the mind is the rein and the driver is the intellect. ***The passenger of this chariot is jivatma.*** It is though important that the body is given its due attention so that it remains healthy and can gracefully bear and carry the soul and the soul which is actual me realizes its self and attains that ultimate being – who is the creator, the nurturer , the destroyer and this emancipated soul gets out of the endless circle of life and death and attains moksha .

What disturbs me the most is that we humans have still not been able to think beyond this body and this aspect of humans is making us live in an ***illusion.*** This

body is destructible, it will survive for just a limited period so give it its due share ***but what are we doing for our eternal self,*** our jivatm, our soul which is actual us and is eternal. Like ***God and Prakriti, It never dies because it was never created.***

If we are providing food to our bodies which is ***Panchodnam*** then how can we starve our souls. Our soul is in dire need of ***Brahmodanam*** which will elate it and help it attain the ultimate truth for which we have acquired the human body. Lets end its starvation and give it what it actually requires.

Believe me that the eternal truth is that once our body dies all the hard work done for keeping it healthy and beautiful also holds good for that very period only for which it was alive and once the jivatma enters another body the good and the hard work put in for the upkeep of this body does not work for the new body, we need to start afresh. This ends once the soul leaves that body and nothing gets carried forward; but hold on…. any work done for the upkeep of jivatma definitely keeps adding . There is no restart, it keeps adding and the process of emancipation continues and progresses with each good work we do, each yagya we perform, every swadhyay we subject our souls to.

And I should never forget to write that similar is the status of bad deeds and bad karmas which we impose on jivatma. Its not only the good karmas which jivatma carries along but also the bad ones. ***Good karma and bad karma is a long story but to be precise the only litmus test to check whether a karma is good or bad is whatever is spelt out in vedas as shubh karam is good and bad ones are those which have been prohibited by vedas.***

Mind it folks now just donot go on trying to interpret the vedic verses yourself because they can only be interpreted in its true letter and spirit by the learned of vedas ,so go and look for one may be we all find some one who helps us to know what is the righteous path laid for humans and ultimately help us find out who we are. With this little understanding and with the blessings of almighty and my acharya, I wish to unfurl the secrets embedded in the vedas which are fountain of knowledge and appears naturally in yogis and rishis once their souls get purified by following hard yogic practices. I am sure some day, in some human birth with every small good act I perform and every bad

act I avoid I will keep feeding and upkeeping my soul with the kind of brahmodanam it actually requires for attaining sumptuality and I surely will encounter that day when I will also proudly and profoundly say ," hey folks ! **Now I actually know WHO AM I."**

Further insight by the Editor

I recollect an event about a saint who was in need of a learned guru. After all, he reached the residence of the saint and knocked the door. Voice came from the room of guruji asking--- "WHO ARE YOU ?"

The aspirant saint replied--- "Guruji, I have come to you, to get the answer that "WHO AM I ?"

My dear daughter Anu, has also written an eye-opening article named "WHO AM I", which is related to all human beings.

The question- WHO AM I? if is solved, it means, we have realized ourselves as well as God because God resides within us (souls). So, if we realize ourselves then God, within us, is naturally realized. [Rigved mantra 1/164/20 refers].

Daughter Anu, has beautifully quoted an example of mirror. You see, the mirror and the reflection of any object therein, both are non-alive matters and thereby destructible. The said fact is very well known by Anu beti. Time is labouring on. Therefore, later on, when time comes non-alive matters including whole creation made of non-alive Prakriti will automatically be destroyed.

To obtain the answer to question- WHO AM I?

First of all, it is imperative to know the eternal process of creation. It shall not be out of place to mention here that ***Vyas Muni states that if a person doesn't know eternal process of creation from Vedas, he can't be named as a saint.***

See, Vedas educate us that God and souls are alive matters, eternal and indestructible (immortal) whereas Prakriti is non-alive matter and is also immortal. We must know about non-alive Prakriti as well to get the answer to question ---"WHO AM I".

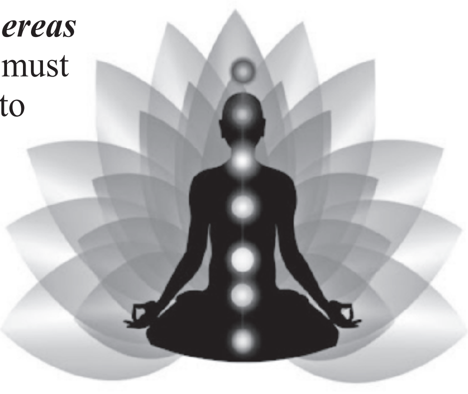

You see, there are unlimited non-alive matters made of Prakriti, like mountains, stones, sand, water, fire, bodies of living beings including whole creation. And the said matters have different types of qualities individually. You see, the main reason of creation is non-alive ***Prakriti which has three qualities--- RAJ,***

TAM & SATV (See Sankhya Shastra sutra 1/26). Being the main reason of creation, the Prakriti is named as main ingredient ***(Upadan Karann)*** of the universe but since the Prakriti is non- alive matter, so it can't create anything on its own. That is why, ***Vedas educate us that efficient cause (Nimit Upadan Karann) of creation is God Himself being alive. All four Vedas preach that God is ONE, alive, eternal and immortal whereas alive souls are innumerable, eternal and immortal. Non-alive Prakriti is also one. About innumerable souls, Rigved mantra 10/129/5 also briefs.***

There is no father, mother of God and souls, they being eternal and immortal. Since, there is no father, mother of God and souls, that is why, both are called ***"Swayambhu"*** in Vedas. ***Yajurveda Mantra 40/8*** states that God is Swayambhuhu which means eternal and immortal, i.e., nothing can be made from God because omnipresent God exists Himself and God has not even been created by any matter. ***That is why, in Vedas, God is called Swayambhu.***

As far as Soul is concerned, ***Soul is an alive matter, also is Swayambhu,*** soul is eternal and is separate from all senses and perceptions. ***Soul enters the body of human being to attain his goal, to realize God, by following Vedas. The Body in which alive soul enters is made of five elements i.e., fire, water, earth, air and space. The said five elements further made of Prakriti, are also destructible.***

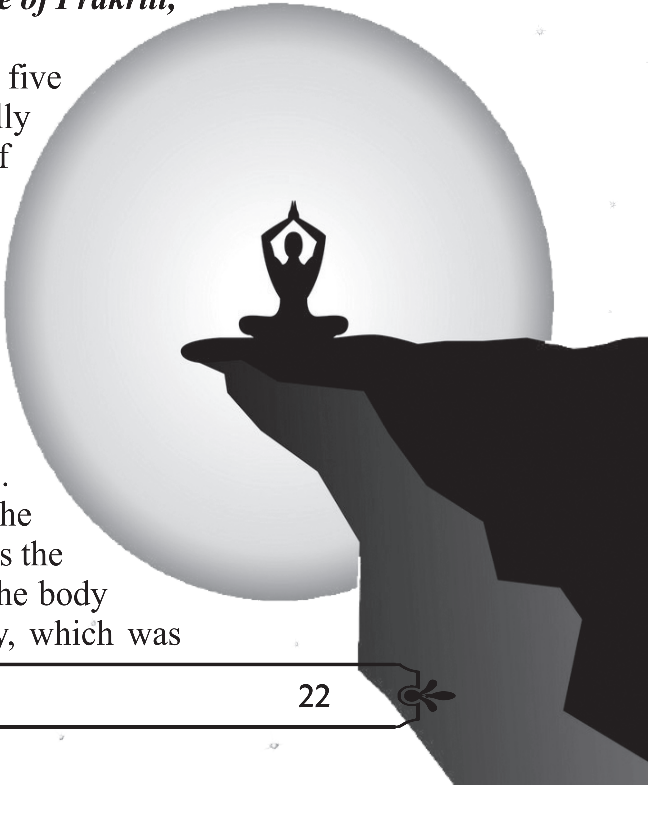

Therefore, human body made of five tatv/elements of Prakriti is automatically destructible. Alive soul enters the body of human beings made by five destructible elements quoted above. See, soul is eternal, alive and everlasting but the whole world including the bodies of human beings made of above quoted elements is destructible. It concludes that alive soul resides in a destructible body of human being and other living beings also. Till such time the soul resides in the body, the body works. When the time of death comes the immortal soul being alive, comes out of the body ***(see Yajurveda chapter 39)*** and the body, which was

already dead being non-alive, stops working i.e., sense organs, organs of action, mind and intellect including whole body would not work. And it is well understood that non-alive matters like bricks, stones, iron etc., are unable to move independently. On the other hand, alive matters like soul, animals, trees etc., show movement. And remember ***this is the answer to the question WHO AM I*** that I am soul and not human body.

Rigved mantra 1/164/20 preaches that Almighty God and soul reside within body. Soul is free to do pious or sinful deeds through body but not God.

God is only seer and awards the result of deeds. If deeds are pious then result is pious and pleasure- giving otherwise sorrowful (see ***Yajurved mantra 7/48***). Therefore, the cause of creation is Almighty ***God & Prakriti*** as quoted above and the process of the said creation is eternal and immortal. (see ***Yajurved mantra 31/3,4***). For example, potter makes pots etc., from clay. So here, potter being alive is called efficient cause of Pots and Clay being non-alive matter is called the main ingredient out of which pots are made. So, we must know about the above quoted reasons of creation, mentioned below....

Efficient cause ***Main ingredient***

The above fact has very well been introduced by God in ***Rigved mantra 10/129/6*** wherein, God states that **"ABHU"** i.e., Prakriti is the main ingredient of universe. Study of ***Rigved Mantra 10/129/7*** reveals that the ***Almighty God is Lord of Prakriti,*** from which God creates the universe, God being alive. According to ***Rigveda Mandal 10 sukta 129,*** and ***Sankhya Shastra sutra 1/26,*** we come to know that in the creation, body of living beings is made of non-alive matter, Prakriti. Here, we must know that our body is not immortal, it is destructible being made of five elements of Prakriti.

Rigved Mantra 10/129/5 preaches that before the creation, at the time of final destruction, there existed unlimited alive souls. God had already created the bodies of living beings from non-alive five elements of Prakriti. [So, naturally, the bodies are non-alive and destructible].

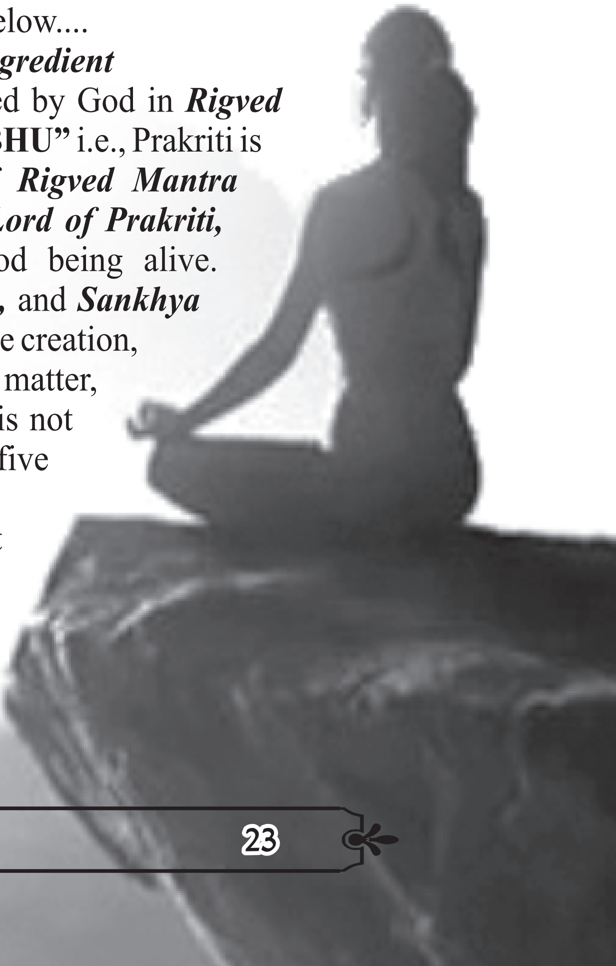

God makes the alive souls to enter into the bodies, based on their pious and sinful deeds. Therefore, the body of human beings is non-alive matter and one day when alive soul leaves the body, body gets destroyed and not soul. It also concludes that body is separate and soul is separate.

For example- we the human beings reside in a house in a room. Here room is separate, human beings are separate. ***In Bhagwad Geeta, Yogeshwar Sh. Krishna Maharaj*** advices all human beings to ***"KNOW YOURSELF THROUGH YOURSELF"*** and in Shloka 2/20 Sh. Krishna Maharaj also states that soul is alive, soul neither takes birth nor dies, soul based on previous lives' good and bad deeds enters the womb of mother to bear/face the result of deeds of previous births. So, we are souls and not human bodies. This is the answer to the question --- WHO AM I.

The said fact has also been told by daughter Anu through a **KAFI OF BULLEY SHAH AS** under — **BULLAYA KEE JANA MAIN KAUN BULLEH SHAH** states that he does not know himself as to WHO AM I.

1. Na main momin which maseetan **2. Na Main which kufar diya reetan**
3. Na main paakaan which paleetan **4. Na main moosa na phiron**

<u>**MEANING :**</u>

1. Neither I am Momin nor am I Muslim in the Masjid. I do not follow path of ingratitude (kufar).
2. I am not a pious person amongst the impious people.
3. And I am also not an unholy person amongst Holy persons.
4. I am not moosa nor I am phiron. [Phiron was a cruel king who was killed by moosa.]

1. Na main which paleetee paaki **2. Na which shadi na gamna ki**
3. Na main aabi na main khaki **4. Na main aatish na main paun.**

<u>**MEANING :**</u>

1. I am neither within the holy persons nor unholy persons
2. My stage is neither of happiness nor of sadness.
3. I am neither water nor clay. 4. Neither I am fire nor wind.

1. Na main bhet mazhab da paaya. **2. Na main Aadam Hua jaaya.**
3. Na kuchh apna naam dharaaya.

<u>**MEANING**</u> **:**

1. I could not get the secrets of religion. 2. I am not even son of Aadam and Hva.
3. I have not kept any name for myself.

(This fact is also mentioned in Vedas that there is no father and mother of soul because soul is away from cycle of birth and death.)

1. Awal akhir apnu janaa.(I have known myself)
2. Na koi dooja hor pehchchana.
3. Main thon vad na koi siyaana. 4. Bulleya auho khadaa hai kaun.

MEANING :

1. In the end, I know myself that WHO AM I that I am eternal, immortal, alive, everlasting soul who is away from cycle of death and birth.
2. I have come to know that all are alive souls and not body therefore there is no one who is separate from me.
3. No one is wiser than me, everybody is soul and has equal divine qualities of being immortal etc.
4. Idea of Bulley Shah is that the person standing before me is body but within the body there exists soul and without alive soul non-alive body cannot do anything and can't even stand independently being non-alive matter. So, Bulley Shah clarifies that person standing before me is idol which will be destroyed one day. So, after realizing knowledge, meaning of Bulley Shah is this that the idol (shape) of the person is body, made of five elements. So, I am not a body and the person standing before me is also not a body. So, we all human beings and other beings are soul having equal divine qualities and we are not destructible bodies.

Rigved Mantra 6/47/18 explains that when alive soul resides in human body or as in other living beings' bodies then the soul is deemed to be seen according to those different bodies. For example --- in a body of man, he is like man, in body of woman he is like woman, in bird, soul is like bird, in that of elephant's body, soul is like elephant.

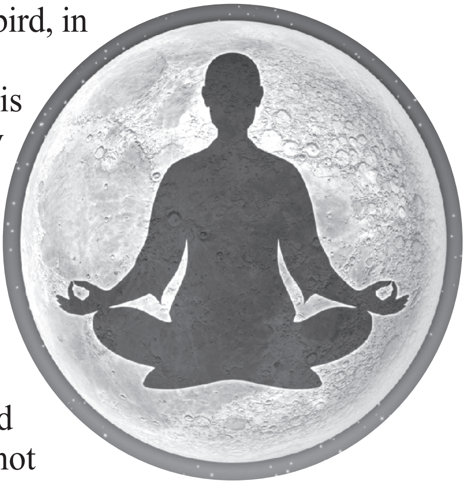

Here we must remember that a person who is indulged in illusion would consider himself as a body and seeing the bodies of other beings he would also consider them as bodies and not souls. So, to know the eternal truth that we are souls we will have to listen to Vedas under guidance of learned Acharya who knows Vedas and Ashtang Yog philosophy. So, bodies are different but soul residing in the bodies, would always remain unchangeable. So, time and again we must know the truth that we are soul not destructible bodies.

Therefore, the answer to question that WHO AM I? is

that I am ALIVE and IMMORTAL SOUL who resides in human body to worship God according to Vedas, to realize God. Because soul himself can't do any deed etc., that is why, Almighty, immortal God provides soul with a wonderful body of human beings which contains five senses, five perceptions, mind and intellect which should be under the control of alive soul but chitta vritti (faculty which receives knowledge from five senses and passes the same to intellect is called Chitta and Chitta stores the effect of various karmas to be faced by soul in future at a proper time), of the soul through above quoted senses, perceptions goes out of body and gets entangled into Prakriti made matters like gold, silver, bodies of opposite sex, illusion etc., and duly indulged in illusion, soul forgets Vedic path of spiritualism and even soul thinks himself that he is a body and hence problem. A fraction of God's power targets the non-alive matter, Prakriti and creation begins.

This eternal fact has also been preached by Almighty God in ***Rigved mantra 1/22/15*** stating that the earth is created by God, with the help of non-alive Prakriti, for the human beings to spend their long lives' happily and comfortably to the extent that no one suffers pain even from a small thorn. The earth provides us with several types of matters like food grains, fruits, medicinal herbs, trees, ponds, rivers, seas, precious gems, iron, gold, silver etc., which are pleasure giving to all human beings. So, the innumerable matters are provided to us by God to survive while discharging our duties faithfully according to Vedas and by following the Vedic path, to know the answer to question--- **WHO AM I ?** But to our bad luck, since the time human beings have oversighted the Vedic knowledge which emanates directly from God and is meant for the welfare of mankind, mostly humans are experiencing difficulties, tensions, diseases, grief, sorrows i.e., innumerable problems, due to following their own path and not Vedic path.

My dear daughter, Anu has also beautifully said in the article that ***"what happens to me once this body becomes lifeless."*** See, here the meaning of lifeless is that at the time of death, alive, everlasting soul leaves the destructible body which is a mere house to live in temporarily and has to enter another living being's body,

based on his good and bad deeds, under God's administration.

The conclusion of four Vedas, six shastras, Upnishads and other ancient granths, written in Sanskrit by Rishis-Munis [not by any man or woman, who lack Vedas' knowledge] is this that if any aspirant follows Vedic path and does hard practice of Ashtang yog for long period of time, continuously, he only becomes able to first know about alive and non-alive matters and to realize that WHO AM I. And anyone else who thus knows himself, then he also realizes Almighty God, who creates and nurses the universe, because Almighty, Omnipresent, formless God also resides within the soul, in the body (Rigved mantra 1/164/20 refers).

For example--- if some persons are residing in a room naturally, they know each other. So, is in the matter of God and souls. God, in ***Rigved mantra 1/164/20,*** clarifies that soul resides in the human body and God also resides within the human body. Naturally, both soul and God would know each other.

So, only rishis, Munis, yogi who have done hard tapsya for long-long time, had/have realized....

1. **Body of human beings is made of five elements as stated above and being non-alive matter it would be destroyed one day.**
2. **Body of human being is like a house for God and soul to live therein.**
3. **God, soul and body are separate from each other.**
4. **The tapsvi Rishi Munis also knew/know that they are immortal souls and not body and thus they realize the answer to question WHO AM I.** VIV

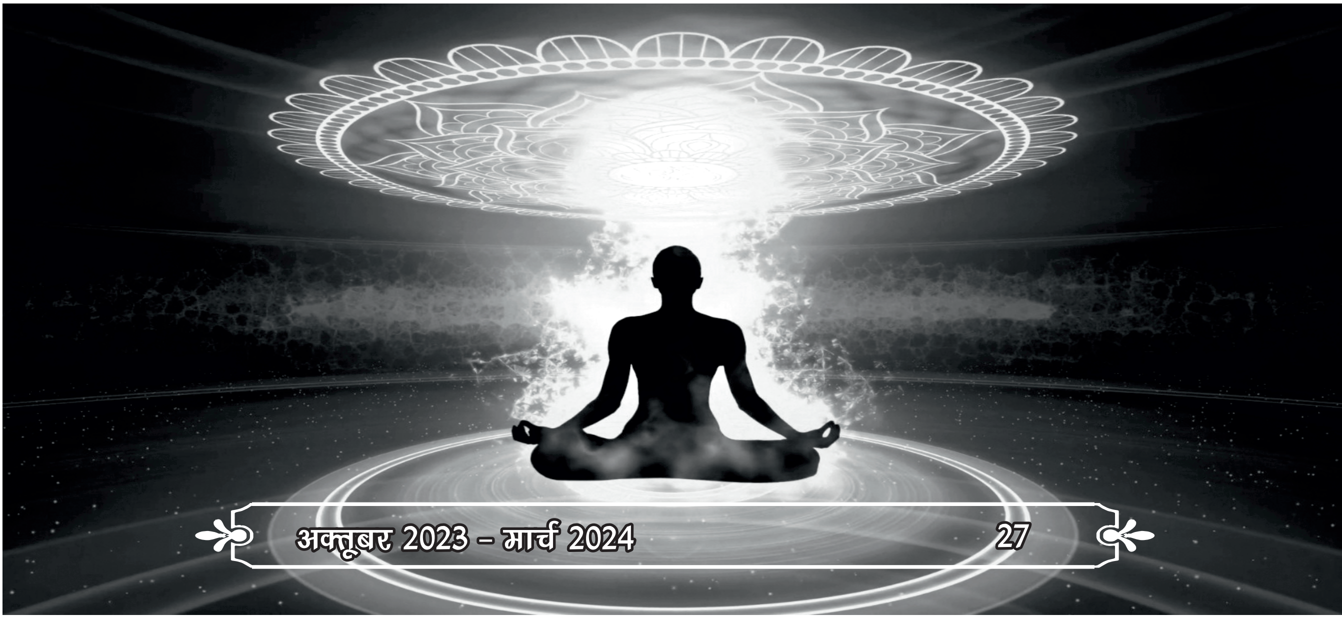

विद्वानों के संग से जाना-सत्य ज्ञान का दाता कौन है

अंजना दिवान (इंडोनेशिया)

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

(सामवेद मंत्र *1*)

सामवेद के पहले ही मंत्र में ईश्वर कह रहा है, अग्न आ याहि– हे ईश्वर आप आ जाओ। वीतये गृणानो– वेद का ज्ञान देने के लिए आप आ जाओ। हव्यदातये– हे ईश्वर आप दाता हो। द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथ्वी लोक, इन तीनों लोकों को रचकर आप ने हमें दान में दिए हैं। नि होता सत्सि बर्हिषि– हे दाता! आप संसार के कण–कण में व्यापक हैं। इस मंत्र का गहन विचार करें तो यही समझ में आता है कि तीनों लोकों का दाता– परमेश्वर सर्वव्यापक है और उसी परमेश्वर से हम प्रार्थना कर रहे हैं कि आप हमें वेद का ज्ञान देने के लिए आ जाओ। सामवेद के नीचे दिए गए दूसरे मंत्र में परमेश्वर स्वयं यह रहस्य खोल रहा है।

ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
देवेभिर्मानुषे जने ॥

(सामवेद मंत्र *2*)

त्वमग्ने यज्ञानां होता– हे ईश्वर आप यज्ञ के दाता हो।
विश्वेषां हित: – यह यज्ञ सारे संसार का कल्याण करने वाला है।
देवेभिर्मानुषे जने– और यह विद्वान् जन ही यज्ञ द्वारा मनुष्यों का कल्याण करने वाले हैं अर्थात् यही विद्वान् मनुष्यों को सत्य विद्या–वेद का ज्ञान देने वाले हैं और हमें उन की शरण में जाकर उनकी सेवा करके उनसे वेदों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। अब प्रश्न यह उठता है कि परमेश्वर मनुष्यों को क्यों विद्वानों की शरण में जाकर सत्य ज्ञान लेने के लिए कह रहा है?

संपादक के विचार

सामवेद उपासना काण्ड है। अंजना बेटी ने मंत्रों का अध्ययन, श्रवण और मनन करके अपने बहुत सुन्दर विचार कहे हैं। मन्त्र एक कहता है कि हे मनुष्यों! परमात्मा से इस प्रकार प्रार्थना करो कि (अग्ने) प्रत्येक कर्म से पहले आप स्मरणीय हैं– पूजा के योग्य हैं, आप सर्वव्यापक आदि अनन्त गुणों से भरपूर हैं अतः हे परमेश्वर! आप (गृणानः) स्तुति किए हुए और वेदों का उपदेश करते हुए (वीतये) हमारे हृदय में ज्ञान उत्पन्न करने के लिए तथा (हव्यदातये) देने योग्य सब पदार्थों को देने के लिए, श्रेष्ठ बुद्धि, बल आदि सद्‌गुणों का उपदेश करने के लिए (आ याहि) मेरे हृदय में आओ अर्थात् मैं वेदानुसार योगाभ्यास, विद्वानों से वेद सुनना, नाम स्मरण आदि द्वारा आपकी उपासना करता हूँ अतः आप मेरे हृदय में प्रकट हो जाओ और वेद का ज्ञान मेरे हृदय में प्रकट करो (होता) आप सब पदार्थों के देने वाले हो (बर्हिषि) यज्ञ में (नि सत्सि) विराजिये।

भाव यह है कि जिज्ञासु जब वेद–मार्ग पर चलने लगता है और वेदानुसार ईश्वर की पूजा, उपासना, वेद सुनने, योगाभ्यास करने, विद्वानों का संग करने एवं ईश्वर का नाम जपने आदि द्वारा नित्य साधना करता है तो परमेश्वर उसके हृदय में प्रकट होता है। वेदों का निष्कर्ष है कि ऐसी साधना करने से ईश्वर की सच्ची पूजा होती है जैसे श्री कृष्ण महाराज ने ***भगवद् गीता श्लोक 3/15*** में स्पष्ट उपदेश दिया है कि हे अर्जुन! तू कर्मों को वेदों से उत्पन्न हुआ जान, वेद अविनाशी परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं अतः सर्वव्यापी परमेश्वर सदा से ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है। अतः जीवन में यदि किसी ने यज्ञ द्वारा परमेश्वर की पूजा नहीं की, परमेश्वर का मान–सम्मान नहीं किया तो समझो ना तो कोई ईश्वर को जानता है और ना ही उसकी सच्ची भक्ति करता है। अतः वेद ज्ञाता, विद्वानों का संग करके हम वेदों द्वारा ईश्वर की पूजा और ईश्वर के स्वरूप को जानें। फलस्वरूप ही हम सुखी रह सकते हैं। यही कुछ भाव अंजना बेटी ने अपने सुन्दर और सच्चे लेख में व्यक्त किए हैं। ***सामवेद*** के दूसरे मन्त्र का भाव है कि स्वयं प्रकाशक परमेश्वर, सब यज्ञों को ग्रहण करने वाला, यज्ञ का स्वामी है। आप वेद के ज्ञाता, विद्वानों द्वारा मनुष्यों का कल्याण कराते हो और मनुष्यों को ईश्वर प्राप्ति कराते हो।

भाव यह है कि ईश्वर वेदों में बार–बार उपदेश करता है कि साधारण मनुष्य अर्थात् नर–नारी, विद्वानों का संग करके, वेद विद्या को प्राप्त करें और वेद में वर्णित ज्ञान प्राप्त करके तथा ***यजुर्वेद मन्त्र 40/2*** के अनुसार गृहस्थाश्रम के, वेदों के द्वारा कहे, शुभ कर्मों को भी करते–करते, बुरे कर्मों में लिप्त न हों। इस प्रकार सुखी जीवन व्यतीत करने–करते ईश्वर को प्राप्त करें। अंजना बेटी वर्षों से, अपने पति राकेश बेटे के साथ, अपने आचार्य से वेदों का ज्ञान सुन–सुनकर और आचरण में लाकर भी, विदुषी बनने योग्य होती जा रही है और वेदों का प्रचार भी बहुत करती है। इसकी हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है। (क्रमशः)

Correspondence between Swami Ram Swarup 'Yogacharya' & Late S. Khushwant Singh Ji

(Continued)

(on the subject of Atheism & Casteism etc.)

Original Letter

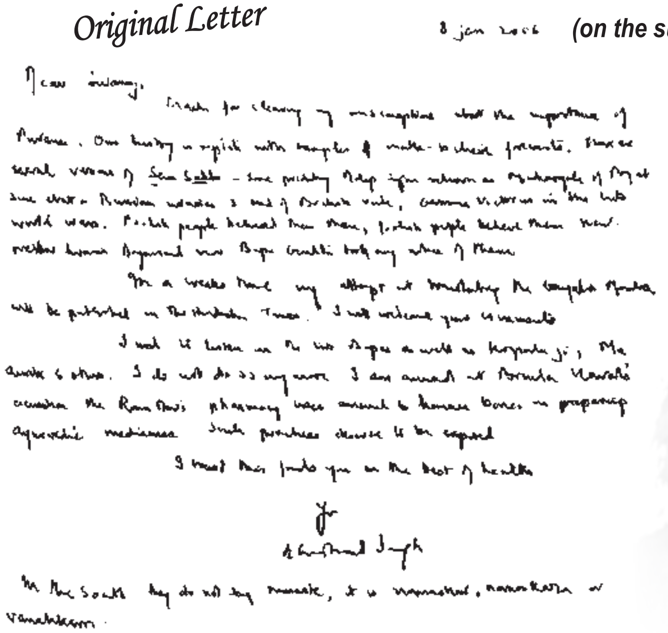

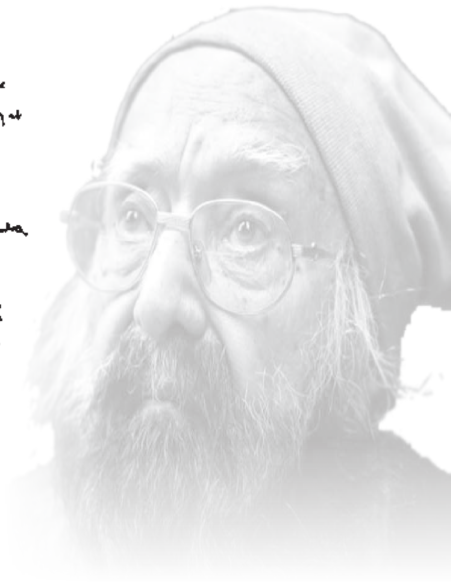

Khushwant Singh
49-E, Sujan Singh Park
New Delhi-110003 8th Jan 2006.

Dear Swamiji,

Thanks for clearing my misconceptions about the importance of Puranns. Our History is …….. with examples of make believe forecasts. There are several versions of seva-sakhi- some predicting………. Reborn as Maharajah of Punjab, some about a ….. and end of British rule, German victories is the …… world wars. Foolish people believed them then, foolish people believe them now. Neither Swami Dayanand nor Bapu Gandhi took any notice of them. In a week's time my attempt at translating the gayatri mantra will be published in Hindustan times. I will welcome your comments. I used to listen two sages as well as Kirpaluji, ma anandi and … I donot do…. Anymore. I am asked at …… The Ram Dev's pharmacy has …………….. to human bones in preparing ayurvedic medicines. Such practices deserve to be exposed.

I trust this finds you in the best of health.

Yours
Khushwant Singh

In the south, they donot say namaste, it is namaskar, namaskaram or vanakam.

Shri Khushwant Singhji
49-E, Sujan Singh Park
New Delhi-110003

Swami Ramswarup, Yogacharya,
Ved Mandir, Tikka lehsar,
Yol bazaar, Yol Camp,
District Kangra, H.P.
Dated- 22nd Jan 2006.

Most Respected Shri Khushwant Singhji,
Namaste,

I hope this letter finds you in the best of your health and spirit for which I always pray to God. Received your loving letter dated 8th Jan 2006. Sir, I thank you a lot for writing the said letter with your golden hand.

A forecast was also made in respect of honourable late P.M. Smt. Indira Gandhi, about her death which was found to be false. It was clarified by the scientist Professor Yashpalji on T.V. that this prophecy was printed in a magazine or newspaper backdated, i.e., after her death. So really, foolish people believe in prophecies and actually he is foolish who lacks knowledge and is not a hard-worker towards true path. Sir, I was pleased to receive your said views on Gayatri mantra published in Hindustan Times Dated 14th Jan 2006. So, as per your desire, I am sending herewith the views based on Vedas, Shastras and ancient knowledge of Rishis.

Om- Om in Islam has become Ameen and in Christianity it is Amen. Ameen means peace. We say Om Shanti. In Sanskrit to take breath is called An. So, Om+An= Omen which means peace.

Further,

Vi+ Omen= Vyomen i.e. This is second shanti. Third Is Param Vyomen. The prayer is always chanted three times, i.e., Om Shanti, Shanti, Shanti.

So, Om exists in above all. In English, Omen is used to signify good or bad effect, i.e. good or bad omen. But in Ved, it is used for good only. So, the best name of God is Om which directly emanates from formless God at the beginning of creation of universe whereas word “God” is man-made please. Hence, Dear Sir, Yes, it is legitimate to use the word “OM” for God. To concentrate the mind from wandering, the meaning of Om is required to be repeated within mind, being conscious of the fact that the mind does not deviate to other subjects while concentrating on the meaning of Om. Chanting of Om will be helpful to attain concentration of mind but not completely. However, I would also like to mention here that the chanting or repeating the holy word Om would give the said result only if Yama and Niyam i.e. the first two parts of Ashtang Yoga Philosophy are fully practised. These two parts are-

Yama including Satya (truth), Ahimsa (non-violence), Brahmacharya (control over senses), Asteya (abstention from theft), Aparigreha (not to assemble any article or money more than the requirement).

Niyam including Shaoch (cleaniless), Santosh (contentment), Tap (Tapasya i.i.e. listening of truth, speaking truth, doing yagya etc.), Swadhyaye (listening of Vedas, reading true religious texts etc.), Ishwar Pranidhanani (complete faith on God and to attribute all actions in God).

I may also add that the best way is to repeat the holy name “Om” without chanting by mouth.

God has unlimited qualities and unlimited names. Gayatri mantra itself enlists the name of God as follows- Om, Bhuhu, Bhuwaha, Swah, Savituhu, Bhargaha, Dev. Out of the unlimited names of God, may I have the privilege to explain a few-

1.) “Bhaj Sevayaam” from this dhatu the word “Bhag” is made and on adding “Matup” to it, word “Bhagwan” is made. Its meaning is He Who has unlimited glory, merriment and Who is adorable. Therefore, the name of God is Bhagwan.

2.) “Pre Palan pooranayoho” from this dhatu, the word “purush” is made. Its meaning is He Who is complete in all respects in the universe. So, the name of God is Purush.

3.) "Pa Rakshanne" from this dhatu "Pita" word is made. He Who is saviour of public and wishes progress of all. So, the name of God is "Pita".

4.) "Raha Tyage" from this word "Rahu" word is made. Its meaning is one Who is unparalled/inequivalent by qualities and with whom other matters cannot be connected, who is empowered to destroy the sinners, wrongful persons and can also separate the sinners from other gentle persons. So, the name of God is "Rahu".

5.) Vishlari Vyaptau Vishnu" from this dhatu "Vishnu" word is made. Its meaning is omnipresent, so the name of God is Vishnu.

6.) "Kit Nivase Rogapanayane Cha" from this dhatu "ketu" word is made, meaning He Who is omnipresent, away from all diseases, sorrows etc. and keeps away the aspirants from diseases and sorrows at the time of salvation. So, the name of God is "Ketu".

Hence, based on these eternal fundamentals, the names of God according to His qualities are Brahm, Brahma, Rudra, Shiv, Agni, Bhumi, Akshar, Brihaspati, Prann, Parmatma, Dev, Kuber, Prithvi, Akash, Vasu, Rudra etc.etc.

SWAHA-

The meaning of "Swaha" may also be discussed as follows"-

Swaha= (Su+ aha) (Su+Hve)

"Su" is a "Nipat" which is added before noun to make the noun a "Samas". Meaning of "Su" is good, sweet, the best, beautiful/pure, true speech. Now, the meaning of Swaha is that all human beings must utter true, beautiful, sweet, pure words (vaani) and must do deeds based on truth only and therefore the word Swaha is used in the end of every ved mantra while performing holy Yagya/hawan. Several ved mantras contain the word "Swaha" within them but keeping in mind its main meaning i.e. true voice and hard deeds that it is used at the end of each mantra while performing holy yagya.

An ancient Rishi Yask wrote a pious book "Nighantu" in Sanskrit wherein vedic mantras with meaning have been briefed. At one place, he has stated that moon receives sun rays and gets Enlighted i.e. moon is brightened by absorption of sun rays should be known by the aspirants who are desirous of knowing the concerned meaning of vedic mantras.

In this connection, Yask Muni states the proof of Yajurved mantra 18/40 as under-

Here Devta i.e. subject matter of the mantra is moon (chandrama). Yask further states about the said mantra that – showering the best pleasure to the human-beings, there is sun ray (Rashmi) named "Sushumaan". The moon is called Gandharva to attain the said sun ray. In the space, the planets connected with the moon move in the space, that is why they are called "Apsaram". As the planets emit light, so they are called Bhekuri.

Mantra further states that Kshatriya (soldier) must wield power and glory (glamour) like the sun and this power should increase manifolds to protect all from enemies and sinners. The power of Brahmin (learned) should be like the moon to guide the society and educate the nation to preserve their glamour (Tej) and strength of character (Oj).

Mantra further says that therefore (vaat) i.e. to attain pleasure, (Tasmai) that moon, (Swaha) i.e. true knowledge, i.e. to attain pleasure we must know the true knowledge of moon by true voice of Vedas and hard-working. The underlying meaning is that we must have knowledge of science by hard-working. So, here the meaning of Swaha is true knowledge by true voice (preach) and true hard-working.

Your excellency may kindly reckon the fact that Vedas contain divine Sanskrit language which was spoken by the people right from the beginning of the creation of Earth and thereafter so many languages have taken birth and every language is respectable. Hence, "Swaha" word is used with every ved mantra while performing holy yagya. Yajurved mantra 38/6, 7,8,9,10,11 contain "Swaha" within them, meaning true action, true deed, true speech.

(To be continued...)

विद्या तप और दान

ऋचा कौशिक मित्तल
इंजीनियर (बी.टैक.)

युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा–

''विद्या, तप और दान में कौन श्रेष्ठ है?''

भीष्म ने कहा– ''इस सम्बन्ध में व्यास ने मैत्रेय को निम्न उपदेश दिया था–

''वेद में जिन कर्मों की प्रशंसा की गई है, उन सब में दान श्रेष्ठ है। दाता वास्तव में प्राण दाता है। विद्वान् मनुष्य ही दान, यज्ञ, सम्पत्ति और सुख का अधिकारी है। जो मनुष्य विषय–सुख में आसक्त रहता है, वह अन्त में दुःखी होता है; जो तप आदि कर्मों में प्रवृत्त होता है, वह अंत में सुख पाता है।

मनुष्यों में कुछ पुण्यात्मा होते हैं, कुछ पापी होते हैं और कुछ पुण्य–पाप, दोनों से हीन होते हैं। यज्ञ, दान, तप आदि कर्म करने वाले मनुष्य पुण्यात्मा हैं, द्वेष के प्रभाव से बुरे कर्म करने वाले पापी हैं। जो लोग इन दोनों प्रकार के कर्मों को त्याग कर केवल ब्रह्म–ज्ञान प्राप्त करने का यत्न करते हैं, उन्हें पुण्य–पाप से हीन समझना चाहिए। जो मनुष्य धर्म–अधर्म का विचार किए बिना कर्म करते हैं, उनके कर्मों का फल हानिकारक होता है; वे पापी हैं।

गृहस्थ का अन्न खाने से ब्रह्मचारी और सन्यासी का तेज बढ़ता है; गृहस्थों से दान लेने में यही उनका हेतु है। परंतु गृहस्थ को किसी दूसरे का दान न खाना चाहिए। ***तप और शास्त्र–ज्ञान दान से कम नहीं हैं;*** तप और विद्या से ही मनुष्य की बड़ाई होती है। संसार में जो कुछ भी दुष्प्राप्य है, वह सब तप और शास्त्र–ज्ञान से प्राप्त हो जाता है।

संपादक के विचार

ऋचा बेटी ने अति उत्तम ज्ञान युक्त कथा का वर्णन किया है। गृहस्थाश्रम में रहने वाले प्रत्येक नर–नारी को कथा में कहे ज्ञान को आचरण में लाकर अपने जीवन को सफल करना चाहिए। विद्या तो ईश्वर ने, मानव के कल्याण के लिए, चारों वेदों में दान की हुई है। अतः प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर द्वारा वेदों में दी हुई आज्ञा के अनुसार वेद एवं योग विद्या के ज्ञाता, आचार्य के पास जाकर विद्या

परंतु ईश्वर ने तो प्रत्येक वेद में यह ज्ञान दिया है कि जो जिज्ञासु वेद एवं योग विद्या के आचार्य से वेद वाणी सुनता है तो वह इस लिपि रूप वेदवाणी की तरफ जिज्ञासु होकर देखने लगता है और उसे इस लिपि का ज्ञान भी हो जाता है। दूसरा, यह है कि जो आचार्य से इस शब्द रूपी वेद वाणी को सुनता है, उसे वेद मन्त्रों के अर्थ का ज्ञान हो जाता है और वेदवाणी को नित्य सुनने लगता है। ऐसे जिज्ञासु/ज्ञानी के लिए वेद वाणी अपने आत्मा को प्रकट कर देती है। इसलिए केवल वेद एवं योग विद्या युक्त आचार्य से ही जिज्ञासु वेद वाणी

प्राप्त करनी चाहिए। इसी पुण्यवान् कर्म को करने के लिए हमें मानव शरीर मिला है।

<u>विद्या</u>– यह कहना पूर्णत: भ्रम युक्त झूठ है कि वेद कठिन हैं। क्योंकि जो वेद सुनता है उसे ही समझ आता है कि वेद तो ईश्वर से निकली सत्य वाणी है जिसमें झूठ का नामो–निशान नहीं है।

ईश्वर ने ***ऋग्वेद मन्त्र 10/71/4*** में उपदेश किया है कि साधारण मनुष्य जिसको लिपि/अक्षर ज्ञान नहीं है, वह लिपि रूप वाणी को आँख से देखता हुआ भी नहीं देखता, इसी कारण से वह वेद वाणी को कठिन कहकर दूर हट जाता है। कई ऐसे भी नर–नारी हैं कि उन्हें वेद मन्त्रों के अर्थ का ज्ञान नहीं होता, इस कारण से वह शब्द–रूप वेद वाणी को सुनता हुआ भी नहीं सुनता।

सुने। ऐसा इस मन्त्र में ईश्वर का उपदेश है। ध्यान रहे कि परमात्मा सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों के हृदय से संसार का कल्याण करने वाली वेदवाणियों का प्रकाश करता है।

<u>दान</u>– प्रथम तो हमें ***ऋग्वेद मन्त्र 1/25/5*** का भाव समझकर ईश्वर की यह आज्ञा माननी चाहिए कि मनुष्य को वेद में कही आज्ञा का पालन करके ही सुख प्राप्त होता है, अन्य किसी और से नहीं। अत: हमें वेदों में कही ईश्वर की आज्ञा का पालन करना परमावश्यक है। अत: ***ऋग्वेद मण्डल 10, सूक्त 107, मंत्र 2, 3, 4*** में ईश्वर का उपदेश–आज्ञा है कि जो यज्ञ में दक्षिणा देते हैं, वे जिज्ञासु यज्ञ में वेद ज्ञान को प्राप्त करके, अपनी आत्मा को ऊँचा उठाते हैं और कहा कि यज्ञ में विद्वानों को दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। ऐसी दक्षिणा

परमेश्वर की प्राप्ति का साधन है, अलौकिक शक्ति है जो कामना को पूर्ण करती है। जो धन आदि का दान नहीं करते, वे पापी हैं। अत: विद्वानों से वेद विद्या सुनकर उनको भोजन से तृप्त करना एवं धन आदि देना चाहिए। अधिकारी पात्र दक्षिणा देने वाला मनुष्यों द्वारा सदा सम्मानित होता है। अत: सुपात्र को ही दक्षिणा देनी चाहिए। जो यजमान यज्ञ में दक्षिणा देकर विद्वान् को प्रसन्न करता है, मानो वह यज्ञ का ब्रह्मा है। ऐसा दानी ईश्वर के नाम को जानकर, ईश्वर को जानने में समर्थ होता है। वेद मन्त्र कहता है कि दक्षिणा में घोड़ा (वर्तमान में वाहन आदि), गौ, चाँदी, सोना और अन्न आदि देना श्रेयस्कर है। वह दानी हमारा आत्मा है—अपना है। उसके लिए दान, पाप को नष्ट करने वाला हो जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1/149/1 में उपदेश है कि जिस प्रकार सुपात्र को दान देने से यश—कीर्ति बढ़ती है वैसे और उपाय से नहीं बढ़ती। अत: सामर्थ्य अनुसार प्रत्येक मनुष्य—नर—नारी को विद्वानों को दान देना चाहिए। कहा भी है— ''जयेत् कर्दयं दानेन'' अर्थात् मनुष्य को दान द्वारा कंजूसी रूपी पाप समाप्त करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 10/57/1 में प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे प्रभु! हमारे अन्दर दान ना देने की प्रवृत्ति न बढ़ जाए। यजुर्वेद मन्त्र 7/46 में ईश्वर का उपदेश है कि

1. वेद और ईश्वर को जानने वाले ब्राह्मण, आचार्य, विद्वान् एवं योगीजन को दान देना चाहिए।
2. सत्य और असत्य का ज्ञान देने वाले ज्ञानी को दान दें।
3. मन्त्रद्रष्टा एवं वेदों के अर्थ बताने वाले ऋषि को दान देना चाहिए।
4. ऋषियों के योगज विज्ञान को प्राप्त हुए पुरुष को, योगी को स्वर्णादि, भूमि, गौ, धन आदि दान करें।

महाभारत ग्रन्थ में कहा—
''हुतम् च दत्तं तथैव तिष्ठति''

अर्थात् हाथ से अग्निहोत्र में डाली गई आहुति का पुण्य और दिया हुआ दान; यह पुण्य हमारे साथ जाता है। दान की अत्यंत महिमा है और वैसा ही उसका महान् पुण्य भी जो इस लोक एवं परलोक में हमारी रक्षा करता है।

तप— पताञ्जलि ऋषि द्वारा लिखित ***योग शास्त्र सूत्र 2/1*** में इस प्रकार कहा है—

''तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रिया योगः''

अर्थात् तप, स्वाध्याय और ईश्वर भक्ति को, ईश्वर पर पूर्ण विश्वास करने को ब्रह्म प्राप्ति का आधार कहा है।

अन्त:करण की शुद्धि के लिए तप और वेदों का अध्ययन करना अति आवश्यक है। ***महाभारत में आश्वः पर्व 1/20*** में कहा

"यज्ञेन तपसा चैव दानेन च नराधिपः।
पूयन्ते नरशार्दूल नरा दुष्कृतकारिणः।।"

अर्थात् पापाचारी मनुष्य तपस्या, यज्ञ और दान से ही पवित्र होते हैं।

व्यास मुनि कहते हैं कि जो मनुष्य तप से रहित हैं उनको योग विद्या की सिद्धि प्राप्त नहीं होती। अनादिकाल से कर्म, क्लेश और वासनाएँ बिना तप के, नष्ट नहीं होतीं। साधना, आसन, प्राणायाम इत्यादि में सर्दी–गर्मी, शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को सहना भी तप है। अतः प्रत्येक स्थिति में तप में विघ्न नहीं आना चाहिए। तप में निरन्तर रत रहना चाहिए। ***यजुर्वेद मन्त्र 1/18*** में कहा– "तपसा तप्यध्वम्" अर्थात् धर्म एवं विद्या अनुष्ठान तप कहलाता है। अतः तप से, जैसा हो सके वैसे तप करो।

सामवेद मन्त्र 50 में वेदों को सुनना तप कहा है। अतः किसी भी मनुष्य के मना करने पर भी, ईश्वर की आज्ञा मानकर सब नर–नारियों को वेद सुनने चाहिए। महाभारत में कहा है कि तपस्या से चित्त एकाग्र करके–शुद्ध करके मुनिगण तीनों लोकों का दर्शन करते हैं। ***केनोपनिषद् 4/8में कहा–***

"तस्यै तपो दमः प्रतिष्ठा"

अर्थात् तप (जो ऊपर कहा है) और इन्द्रियों को योग–साधना रूपी तप से वश में करना ब्रह्म प्राप्ति का आधार है।

अथर्ववेद मन्त्र 12/5/1,2 में कहा–

"श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तऋते"

अर्थात् श्रम का अर्थ है परिश्रम, प्रयत्न और पुरुषार्थ इत्यादि करना तथा तप का अर्थ है धर्म (वैदिक कर्तव्य–कर्म) का अनुष्ठान करना एवं धर्माचरण करना। तैत्तिरीय आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थ में तप का बहुत सुन्दर रूप ऋषि ने दिया है–

"ऋतं तपः सत्यं तपः श्रुतम् तपः शान्तं तपः तपो दमस्तपः शमस्तपो दानं तपो यज्ञस्तपो भूर्भुवः सुवर्ब्रह्मो तदुपास्वैतत्तपः"

अर्थात् जिसका जो और जैसा स्वरूप है, उसको वैसा ही मानना तथा सत्य बोलना, यह तप है। (अतः परमेश्वर का स्वरूप, कर्म, ज्ञान आदि जैसे हैं, वैसे ही बोलने चाहिए)। ईश्वर ने ***यजुर्वेद मन्त्र 40/8*** में कहा कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, उसका शरीर नहीं होता क्योंकि वह निराकार है और अनादिकाल से मनुष्यों के कल्याण के लिए परमेश्वर वेदों का ज्ञान देता आ रहा है, इसलिए हम परेश्वर को ऐसा ही जानें और बोलें जैसा परमेश्वर ने वेदों में उपदेश किया है।

इसी प्रकार सत्य सुनना, शान्त स्वभाव धारण करना, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को अधर्म, आलस्य आदि बुराइयों से हटाकर सत्य एवं धर्म (वेदों में निर्देशित कर्म करना) में लगाना तप कहलाता है। अधिकारी को दान करना, मन को सदा धर्म में स्थित करना तप है। यज्ञ द्वारा परमेश्वर की उपासना करना, अग्नि में घृत् आदि की आहुतियाँ डालना यज्ञ रूपी तप है। अतः प्रत्येक नर–नारी का धर्म (वैदिक कर्तव्य) है कि वह तप द्वारा ईश्वर प्राप्ति करे।

VIV

टी.बी. हारेगा देश जीतेगा

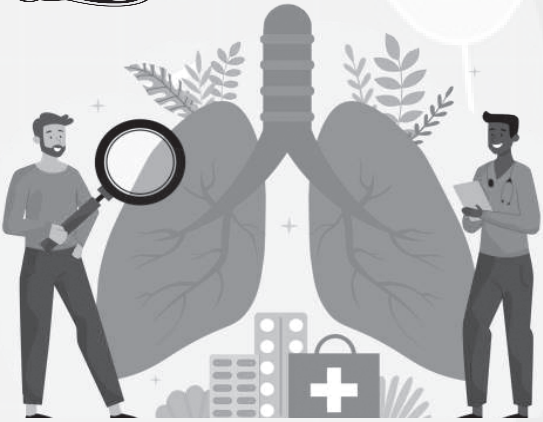

डॉ प्रवीण कुमार शर्मा
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, औषधिगुण शास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राजकीय आयुर्विज्ञान महाविद्यालय एवं
परीक्षा नियंत्रक अटल आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय
मण्डी स्थित नेर चौक (हि.प्र.)

डा. रक्षा सुबह अपने विभाग के कक्ष में पहुँची ही थी कि उनके फोन की घंटी बजी, उन्होंने पर्स से मोबाइल निकाला और फोन करने वाले का नाम पढ़ते ही उनके चेहरे पर एक मुस्कान सी बिखर गयी। उन्होंने फोन उठाया, उधर से आवाज आयी कि मैडम मैं आपको अपने पति से मिलवाना चाहती हूँ, हम हास्पिटल के बाहर ही खड़े हैं। डा. रक्षा ने प्रसन्न हो कर कहा कि तुरन्त अन्दर आओ मैं तो कब से सुधीर से मिलना चाह रही थी। कक्ष में डा. रक्षा ने सुधीर और सुधा को चाय पिलायी और उन्हें उनके सुखी वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएं दीं। जब वे जाने लगे तो डा. रक्षा ने उनको फूलों का एक गुलदस्ता दे कर कहा कि मैं चाहती हूँ कि तुम दोनों सदैव इन फूलों की भाँति सुगन्ध फैलाते रहो। जब वे चले गये तो डा. रक्षा कुछ समय के लिये अपने कक्ष में अकेली रह गयीं, उनके मस्तिष्क में पिछले कुछ समय की बातें घूमने लगीं। ऐसा लग रहा था जैसे कल ही की बात हो जब सुधा सबसे पहले उनके पास इलाज करवाने आयी थी। उसके बाद तो जैसे सुधा उनकी अपनी सी हो गयी, जो अपनी सारी बातें उनसे सांझा कर लेती थी।

सुधा स्नातक की छात्रा थी जब वह सुधीर से पहली बार मिली। वह उसका सहपाठी था और अत्यंत मृदुभाषी था। सुधा भी बहुत सुन्दर थी और विद्यालय में हर एक लड़का उससे बात करने के बहाने ढूंढता था। परन्तु वह अपने अध्ययन और भविष्य के बारे में बहुत गंभीर थी। पर पता नहीं क्यों, सुधीर उसे अच्छा लगता था और वह उससे मित्रता करने को विवश हो गयी। सुधीर भी सुधा की ही भाँति एक मध्यम वर्ग का, अपने भविष्य के बारे में चिंतित युवा था। दोनों को एक दूसरे का साथ अच्छा लगता था और इसी युवावस्था के प्रथम प्रेम में स्नातक के तीन वर्ष कब व्यतीत हो गये पता ही नहीं चला। स्नातक कोर्स पूरा होने पर दोनों ने निर्णय किया कि वे अपने परिवारों की सहमति के साथ परिणय बंधन में बँधेंगे। सुधीर ने ऐसा नहीं सोचा था, पर उसके माता पिता ने इसकी

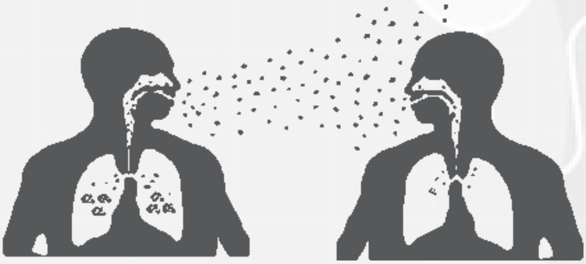

अनुमति नहीं दी। उनका मानना था कि सुधा का घराना छोटा है और यह रिश्ता उनकी कुल मर्यादा के विपरीत है। सुधा और सुधीर दोनों का हृदय बहुत दुखी हुआ पर वे ऐसी परिस्थिति में नही थे कि परिवार के साथ विद्रोह कर विवाह करते। सुधा ने बी.एड. में प्रवेश ले लिया और सुधीर से उसका सम्बन्ध समाप्त हो गया। बी.एड. के बाद वह अपने पास ही के एक स्कूल में अध्यापिका के पद पर नियुक्त हो गयी। उसके माँ और पिताजी ने बहुत प्रयास किया कि वह विवाह के लिये अपनी सहमति दे दे पर वह नहीं मानी। अब उसके भीतर किसी और से प्यार करने की न तो हिम्मत थी और न ही वह इसको उचित मानती थी। अनेकों अच्छे रिश्ते आये पर वह सबको ठुकराती चली गयी। उसके अन्दर जैसे प्रेम का अंकुर सड़ गया था अब उसमें कोंपलें फूटने की कल्पना भी व्यर्थ सी थी।

अपने जीवन के इन घुमावदार रास्तों पर चलते—चलते सुधा बहुत थक चुकी थी वह इसी उधेड़बुन में रहती थी कि जो वह कर रही है क्या वो सही है? उसकी भूख, उसका खाना—पीना, सब बहुत कम हो गया था। उसका सुन्दर मुख पीला पड़ना आरम्भ हो गया था और उसका वज़न भी कम होने लगा था। पच्चीस की आयु में ही वह चालीस की दिखने लगी थी। पिछले तीन—चार दिन से उसे

लग रहा था जैसे उसका शरीर शाम को बहुत अधिक कमज़ोर हो जाता है, जैसे ज्वर मे होता है। आज उसने थर्मामीटर मे तापमान देखा तो 101 डिग्री था। उसने एक पैरासिटामोल की गोली खायी और सोने चली गयी। दो तीन दिन तक यही क्रम चला। एक दिन माँ ने पूछा कि तुम हर रोज़ कौन सी गोली खाती हो तो उसने बता दिया, सुनकर माँ बहुत घबरा गयी, उन्हे प्रतीत हुआ कि पिछले कुछ दिनों से सुधा को खाँसी भी आ रही है और वह यदा कदा पीने की दवाई लेती रहती है। माँ ने निश्चय किया कि कल वह उसको लेकर चिकित्सक के पास अवश्य जायेगी। अगले दिन सुधा उठी तो माँ तैयार बैठी थी। सुधा ने पूछा कि कहाँ जा रही हो तो माँ ने बताया कि तुम्हें लेकर चिकित्सालय जा रही हूँ, मुझे तुम्हारी तबियत ठीक नहीं लग रही है। पहले तो सुधा ने मना किया पर फिर माँ के समझाने पर मान गयी। पहले तो वे पास के ही प्राथमिक चिकित्सालय में गये, वहाँ चिकित्सक ने विस्तार से बात की, छाती का परीक्षण किया और फिर पास में स्थित

चिकित्सीय महाविद्यालय के फेफडों के विभाग में जाने की सलाह दी।

अगले दिन माँ सुधा को लेकर चिकित्सीय महाविद्यालय के फेफडों के विभाग में गयी। वहाँ पर प्राचार्य डा. रक्षा ने जब सुधा को पहली बार देखा तो उन्हें वो ठीक नहीं लगी। उन्होंने प्राथमिक चिकित्सालय के चिकित्सक की रिपोर्ट देखी और कुछ परीक्षण कराने का निश्चय किया। उन्होंने कुछ फार्म भरकर सुधा को खून की जाँच और एक्स–रे कराने को कहा और एक डब्बी दी जिसमें सुबह का पहला बलगम इकठ्ठा कर उसको जाँच के लिये देने को कहा। सुधा ने वैसा ही किया। अगले दिन अपराह्न में सभी रिपोर्ट लेकर सुधा डा. रक्षा के पास गयी। डा. रक्षा ने सभी रिपोर्ट देखीं, उनका सन्देह सच सिद्ध हुआ, सुधा को फेफड़ों का तपेदिक अर्थात् टीबी हुआ था। डा. रक्षा ने सुधा को समझाया कि इस बीमारी का इलाज सम्भव है, सरकार के तपेदिक उन्मूलन प्रोग्राम के माध्यम से इस बीमारी का निःशुल्क उपचार होता है। उन्होंने सुधा को समझाया कि वो मास्क लगाकर रखे जिससे उसके माता पिता इस संक्रमण से बचे रहें और तुरन्त अपने उपचार के लिये दी गयी दवाइयाँ लेना आरम्भ करे। सुधा को बताया कि आरम्भ के दो महीने उसे प्रतिदिन आयसोनायजिड 300 मिग्रा, रिफैम्पिसिन 450 मिग्रा, इथैम्ब्युटोल 1000 मिग्रा और पायराजिनामायड 1500 मिग्रा दी जाऐंगी, कुछ लोगों को इस उपचार से विटामिन की कमी हो जाती है इसलिये उसे प्रतिदिन 10 मिग्रा पायरिडाक्सिन भी दिया जायेगा। डा. रक्षा ने सुधा को बताया कि वह अपने खाने–पीने पर ध्यान दे, दाल और सब्ज़ियाँ अधिक मात्रा मे ले और अधिक परिश्रम से बचे। सुधा टूट चुकी थी पर उसने डा. रक्षा के परामर्श के अनुसार उपचार आरम्भ करने का निश्चय किया। उपचार आरम्भ हुआ, पहले–पहले सुधा को बहुत अधिक उल्टी होने जैसा अनुभव होता था, एक दो बार उल्टी हुई भी, जिसके लिये डा. रक्षा ने उसे सुबह खाली पेट खाने के लिये पैन्टोप्रैज़ोल दवाई भी दी और सुधा को बताया कि यह सब दवाइयों का दुष्प्रभाव है पर इन सब के कारण दवाइयाँ बन्द नहीं करनी हैं।

महीने भर मे सुधा को अच्छा लगने लगा, उसका वज़न भी तीन किलो बढ़ गया था। वैसे दवाइयाँ लेना तो उसे अच्छा नहीं लगता था, उसका मूत्र भी लाल रंग का हो गया था, आँखों में आँसू भी लाल रंग के आते थे पर वह डा. रक्षा पर पूरा विश्वास करने लगी थी। दो महीने के उपचार के बाद थूक की जाँच सहित सारे परीक्षण पुनः

किये गये और सब ठीक पाये गये। यह देखकर डा. रक्षा ने सुधा को उपचार का दूसरा चरण आरम्भ करने की सलाह दी जिसमे उसे अगले चार महीने प्रतिदिन केवल तीन गोलियाँ आयसोनायजिड 300 मिग्रा, रिफैम्पिसिन 450 मिग्रा और इथैम्ब्युटोल 1000 मिग्रा लेनी होंगी। सुधा बहुत प्रसन्न हुई और उसने परामर्श के अनुसार अपना उपचार चालू रखा।

छः महीने के उपचार के बाद डा. रक्षा ने पुनः सुधा के सारे परीक्षण ठीक पाये और उसका उपचार बन्द कर दिया। सुधा ने उत्सुकतावश पूछा कि क्या उसे अब कभी टीबी की बीमारी नहीं होगी? डा. रक्षा ने उसे समझाया कि ऐसा नहीं कहा जा सकता, उन्होंने सुधा को तीन महीने के बाद फिर से आकर अपने बलगम की जाँच करवाने की सलाह दी। सुधा और उसकी माँ ने डा. रक्षा और भगवान् का बहुत–बहुत धन्यवाद किया और घर आ गये।

तीन महीने के बाद थूक के परीक्षण के आधार पर डा. रक्षा ने पाया कि सुधा का तपेदिक वापस लौट आया है, उन्होंने सुधा को बताया कि कुछ लोगों में ऐसा होता है कि उपचार पूर्ण होने के पश्चात् और कुछ लोगों मे उपचार लेते हुए ही तपेदिक पुनः सक्रिय हो जाता है और यह तपेदिक पहले जैसा नहीं होता वरन् इसके कीटाणु पहले ली गयी दवाइयों में से एक या एक से अधिक दवाइयों से प्रतिरोधी अर्थात् रज़िस्टैन्ट हो जाते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि सुधा के बलगम की जाँच सी.बी.नैट. मशीन से की गयी थी जिससे पता चला कि उसके तपेदिक के कीटाणु रिफैम्पिसिन दवाई से प्रतिरोधी हैं।

सुधा सन्न थी, उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था पर उसका एकमात्र सहारा डा. रक्षा ही थी जिन्होंने सुधा को आश्वासन दिया कि दवाई प्रतिरोधी तपेदिक प्रोग्राम में इस प्रकार के तपेदिक का भी उपचार सम्भव व निःशुल्क है। उन्होंने बताया कि इस बार उपचार नौ महीने चलेगा और दवाइयों के दुष्प्रभाव भी अधिक होंगे, इसलिये पहले दस दिन तक दवाई प्रतिरोधी तपेदिक वार्ड में भर्ती कर चिकित्सक की देखरेख में दवाइयाँ दी जायेंगी। सुधा ने हाँ में सिर हिला दिया। अगले दिन सुबह डा. रक्षा ने अपने हाथ से उसे आयसोनियजिड, इथैम्ब्युटोल, पायराजिनामाइड, मोक्सिफ्लोक्सैसिन, इथियोनामाइड, पैराअमीनोसैलिसिलिक एसिड, क्लोफैजीमिन और पायरिडोक्सिन दवाइयाँ दी।

पहली बार दवाइयाँ लेने पर सुधा को लगा जैसे उसके पेट में आग लग गयी हो, उसे चक्कर आ रहे थे, उसके शरीर में झन्नाटे

छूट रहे थे, उसे लग रहा था कि वो अभी मर जायेगी। उसे यह भी लग रहा था कि नौ महीने ये दवाइयाँ खाने से अच्छा तो मर जाना ही है। इस अवस्था में डा. रक्षा उसके लिये देवदूत थीं, उन्होने उसे समझाया और ढांढस बँधाया। दस दिन के उपचार के बाद सुधा को घर पर रह कर ही दवाइयाँ खाने के लिये कहा गया और दवाइयाँ दे कर घर भेज दिया गया।

वह परामर्श के अनुसार दवाइयाँ लेती रही और प्रतिमाह डा. रक्षा से अपना परीक्षण व थूक की जाँच कराती रही। आठ महीने तक सब कुछ ठीक रहा और उसका उपचार पूरा हुआ। सुधा को विश्वास होने लगा था कि अब वह ठीक हो जायेगी, विधाता ने उसकी बहुत परीक्षा ले ली है अब तो वह अवश्य ही उस पर तरस खायेगा और उसे बिना दवाइयों के जीवित रहने देगा। पर विधाता के विधान में कुछ और ही लिखा था। डा. रक्षा ने उसे बताया कि अन्तिम थूक की जाँच में तपेदिक का कीटाणु पुन: प्रकट हो गया है और इस बार वह कीटाणु रिफैम्पिसिन के साथ लीवोफ्लोक्सैसिन से भी प्रतिरोधी है। सुनकर सुधा अवाक् रह गयी, उसका मुँह सूखने लगा, उसके सारे सपने एक बार फिर चकनाचूर हो गये, वह ज़ोर–ज़ोर से रोने लगी पर डा. रक्षा ने उसे नहीं रोका।

कुछ समय पश्चात् डा. रक्षा ने बताया कि अब इस बीमारी के लिये वे प्रि–एक्स.डी.आर. रैजीम शुरु करेंगी। सुधा को चौदह दिन के लिये वार्ड में भर्ती कर लिया गया और बैडाक्विलिन, साईक्लोसिरीन, लायनैजोलिड, क्लोफैजिमीन और पाइरीडोक्सिन दवाइयाँ आरम्भ की गयीं। डा. रक्षा ने बताया कि बैडाक्विलिन एक नयी औषधि है जिसका हृदय पर दुष्प्रभाव सम्भव है इसलिये प्रतिदिन सुधा का ई.सी.जी. परीक्षण किया जायेगा।

सुधा अल्पायु में ही इतनी औषधियाँ ले चुकी थी और उनके दुष्प्रभाव अनुभव कर चुकी थी कि अब वह उन सब से अप्रभावित रह कर जीवित रहने के लिये संघर्षरत थी अत: वह बिना किसी शिकायत के अपने बिस्तर पर बैठी रहती थी। उसने अपने आप को पूरी तरह से डा. रक्षा के हाथों में सौंप दिया था।

दो सप्ताह के बाद सुधा को फिर घर भेज दिया गया। एक महीने के बाद उसके पैरों की उंगलियों में सूजन और जलन होने लगी। इसी समय कोविड की महामारी शुरु हो गयी और लोगों के घर से बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उसने डा. रक्षा को सम्पर्क करने की कोशिश की पर सफल नही हो सकी। एक महीने तक उसकी सूजन और जलन बढ़ती रही और वह कुछ नही कर सकी। फिर एक दिन उसका फोन पर डा. रक्षा से सम्पर्क स्थापित हो गया, डा. रक्षा ने बताया कि वे स्वयं कोरोना से ग्रसित हो गयीं थीं और एकांतवास में थीं। डा. रक्षा ने सुधा का यातायात का पास बनवाया और उसे

अस्पताल के सामने बुलवाया। परीक्षण के बाद डा. रक्षा ने बताया कि यह लायनैजोलिड नामक औषधि का दुष्प्रभाव है, उन्होने इस दवाई को पन्द्रह दिन के लिये बन्द कर दिया जिससे सुधा के पैरों की जलन कम हुई। पन्द्रह दिन के पश्चात् वह औषधि पुन: आरम्भ कर दी गयी, सुधा को हल्की–हल्की जलन पुन: आरम्भ हो गयी पर डा. रक्षा ने समझाया कि चाहे कुछ दुष्प्रभाव हों पर दवाइयाँ बन्द नहीं करनी हैं।

उनके परामर्श के अनुसार सुधा ने दो साल का प्रि–एक्स.डी.आर. कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया। डा. रक्षा ने सुधा को बधाई दी और उसका उपचार बन्द कर दिया। प्रि–एक्स.डी.आर. टीबी के इलाज की इसी अवस्था में एक दिन सुधा ने डा. रक्षा को सुधीर के बारे में बताया था। उसने बताया कि वह वापस आया है, लखनऊ में बैंक में मैनेजर के पद पर कार्यरत है, इतने सालों से अपने आप को कुछ बना कर ऐसी स्थिति में लौटकर सुधा के पास आना चाहता था जब उसके परिवार वाले उसके इस निश्चय का विरोध न कर सकें। वह सुधा से विवाह करना चाहता था। सुधा ने डा. रक्षा से पूछा कि वह क्या करे, उसको तो यह भी पता नहीं है कि वह जीवित भी बचेगी या नहीं और बचेगी तो किस अवस्था में जीवित रहेगी?उसे यह भी पता नहीं था कि जब सुधीर को उसकी बीमारी के बारे में पता चलेगा तो क्या तब भी वह उससे विवाह करना चाहेगा, लोग तो आजकल उसके पास भी आना नहीं चाहते तो कोई उससे विवाह क्यों करेगा? उसके माता पिता चाहते थे कि सुधीर को विवाह से पहले कुछ न बताया जाये, विवाह के बाद उसे अपने आप पता चल जायेगा। सुधा कुछ भी निर्णय नही कर पा रही थी इसी लिये उसने डा. रक्षा को सब बता दिया। डा. रक्षा ने उसे समझाया कि तुम्हें विवाह अवश्य करना चाहिये परन्तु सुधीर को सब सच–सच बता दो, यदि सुधा को इसमें संकोच हो रहा है तो वे सुधीर से बात कर लेंगी परन्तु उसको बिना बताये विवाह नहीं करना चाहिये। सुधा को बात अच्छी लगी, उसके मन का बोझ हल्का हो गया था। उसने सुधीर को सब बता दिया । सुन कर सुधीर की आँखों में आँसू आ गये। उसने रुँधे गले से सुधा को कहा कि इतना कुछ हो गया तो तुमने मुझे क्यों नहीं बुलाया? सुधा निरुत्तर थी। सुधीर ने कहा कि हम दोनों कल ही विवाह करेंगें। और अगले दिन एक छोटे, सुन्दर और अध्यात्मिक समारोह में दोनों का विवाह सम्पन्न हो गया।

डा. रक्षा की तंद्रा भंग हो गयी जब सहायिका ने आकर कहा कि मैडम मरीज़ मिलना चाह रहे हैं। डा. रक्षा ने कहा कि ठीक है और वे उठ कर ओपीडी की ओर चल पड़ी।

VIV

Spirituality & Health

Sapna Dogra

Spirituality is very important for your well-being as it brings harmony, comfort, hope and inner calm in life. Spirituality is the fourth dimension of health while the other three are physical dimension, mental dimension and social dimension. None of these should be neglected for a sound health.

Each one of us would have had suffered from some kind of illness, which might have put us in a sad and frustrating situation. While medication would be helpful in making us recover physically, the real healing is done by our spiritual self. Spirituality will help us stay calm and provide solace in difficult situations giving us inner strength.

A spiritually inclined person will pray, meditate, practice positivity and forgiveness making him/her feel better even in a serious illness. Life will have ups and downs but bracing these anomalies with ease is what we should aim for. This is possible only through spirituality.

Scientific studies have also found a positive co-relation between spirituality and health behaviours with well-being.

A 2019 study at six universities in Poland explored the relations between spirituality, health-related behaviours, and psychological well-being in the context of acquired education.

Both spirituality and health-related behaviours were associated with psychological well-being, the study found. Spirituality is stable over time and contribute to better subjective well-being. It may also be considered to be a fundamental character strength and a crucial factor of positive development, it found. It is common to find that in illness a person inevitably focuses on non-material transcendental things and related spiritual matters.

Spirituality provides solace and strength to patients, which make some patients come out of some grave illnesses. In fact, it would not be wrong to say that maximum number of spiritually inclined and religious people are found in hospitals or care homes. Today, doctors/clinicians also believe that spirituality plays a vital role in healing and health of the people or even themselves.

Spirituality should be incorporated into care for both serious illness and overall health, suggested a new study led by researchers at Harvard T.H. Chan School of Public Health (Harvard Chan School) and Brigham and Women's Hospital, as well as the George Washington University Institute for Spirituality and Health (GWish).

The study, "Spirituality in Serious Illness and Health," was supported by the John Templeton Foundation and published in the

Journal of the American Medical Association in July 2022.

This study represents the most rigorous and comprehensive systematic analysis of the modern-day literature regarding health and spirituality to date," said Tracy Balboni, lead author and senior physician at the Dana-Farber/Brigham and Women's Cancer Center and professor of radiation oncology at Harvard Medical School, in a press release. ***"Our findings indicate that attention to spirituality in serious illness and in health should be a vital part of future whole person-cantered care, and the results should stimulate more national discussion and progress on how spirituality can be incorporated into this type of value-sensitive care."***

There are several such studies/surveys expounding the virtues of spirituality in healthcare and call for embedding spirituality in medical and paramedical curriculum. For a healthy life, it is imperative to be spiritually inclined. One has to look for ways, methods, techniques and lifestyles to be adopted to become spiritually awakened.

Further insight by the Editor

Dear daughter Sapna, has tried her level best to brief the importance of spirituality in human life. You see, peace, harmony, comfort etc., can only be attained if an aspirant follows spiritualism. Spiritualism means to do hard Tapasya according to Vedas which includes yogabhayas, name-jaap of God, performing daily agnihotra, listening of Vedas from a learned acharya, maintaining hard Brahmacharya and thus aspirant attains control over his desires.

This fact has been very well preached in ***Rigved mantra 10/129/4.*** Mantra states that in the beginning of creation desires originate in the mind, which [i.e., the desire] is the first seed (main reason) of the human-beings. Why the desire is first seed [main reason] of the human-beings because the human-body or body of other living-beings is only given by the God, based on the desires. So, if no desire then no death and birth, then naturally no problem, no sorrow etc. Shri Krishna Maharaj also preaches in ***Bhagwad Geeta shloka 13/9*** that birth and death are always painful, sorrowful etc. So, a person, if by doing hard tapsya according to Vedas, overcomes birth and death naturally then he will not get any further birth. When there is no birth, no desire etc., then there is no problem. So, spiritualism makes an aspirant capable of destroying all sorrows etc., and overcome birth and death. As told above in ***Rigved mantra 10/129/4*** that in the beginning of the creation, desires are generated in the mind but the learned, knowing that the desires are the main reason to take birth and death, therefore, the learned control and destroy the desires then and there. In this connection, a couplet is stated by someone that- if desires are finished by virtue of following the Vedic path, then the worries are destroyed. Therefore, the aspirant who destroys his desires, he is the real king. [i.e., he commands on the five senses and five perceptions, mind and intellect]. This is called spiritualism which is beneficial in curing mental and physical ailments and removes all tensions, worries etc.

Vedic spiritualism contains innumerable knowledge of doing pious deeds, attaining knowledge of worldly matters and worship of God according to eternal Vedic philosophy. And to attain the said spiritualism, one has to take shelter of a learned acharya of Vedas and Ashtang Yog philosophy. To our bad luck that in the present scenario, people have ignored to listen to Vedas and following the preach of Vedas, which emanate directly from God, always in the beginning of creation. Vedas also preach deeply, to destroy any type of

disease. For example- ***Rigved mantra 10/85/32*** states that in family life, husband and wife may be infected by venereal diseases. So, mantra preaches that after knowing the main reason of the disease, proper medicine should be taken and especially by following virtuous conduct, the said disease must be cured.

In ***Rigved mantra 10/85/30*** God preaches that a lady while facing time of menstruation should not be touched by husband otherwise the body of the husband would meet with pain and diseases. So unlimited advises of diseases have been given by God in Vedas, here I have mentioned about two diseases only. The idea of introducing these diseases is this that other family related advises and science, agriculture, education, army etc., i.e., unlimited knowledge including spiritualism and materialism has also been mentioned in Vedas for the well being of the people. So, we must consider that in absence of Vedic spiritualism, we are nowhere.

Spiritualism is eternal and immortal worship of God and knowledge of which is mentioned in Vedas, Vedas also being eternal and immortal. This eternal worship only based on Vedas was traditionally in practice of the people of previous three yugas due to effect of which they were blessed with long, ill-free, happy life, say Mahabharat, Valmiki Ramayan and Manusmriti, holy books written by Rishis and not by ordinary men who lack the knowledge of Vedas.

Nowadays, mostly several paths of worship have emerged which do not tally with Vedas. It is astonishing and we the people must throw an eye that when we compare the eternal worship based on Vedas to the present worship against the Vedas, we wonder then why the people of present times are surrounded by several diseases, tensions, worries etc., and why the people have been entrapped in several superstitions like ghost worship, mangalik, kaal sarp dosh etc., inspite of following their own path of worship. Therefore, if a man is not fundamentalist and without favouring anyone, he would be able to think about difference between God made worship in Vedas and present worships.

Then the aspirant would pay his attention towards true worship which is beneficial to whole mankind. So mere preach, prayer and delivering lectures about worship of God etc., are not enough to turn the mind of a person towards Vedic worship, listening of Vedas and doing practice of Ashtang Yog philosophy etc.

In this connection Kapil Muni states in his ***Sankhya shastra sutra 1/23*** that the knowledge of God, even including Vedas which is based on mere listening, discussing, writing etc., is just verbal and is not a realised knowledge. The said Knowledge cannot help to realize God and cannot control five senses etc., being literal knowledge.

Kenopnishad khand 4 shloka 8 also further clarifies that the knowledge gained by mere listening, reading and learning by heart is only a cheating because the base of realising God is doing daily austerity (tapsya), exercising control over mind, intellect and five senses and discharging duties mentioned in Vedas and four Vedas describe about the knowledge of God in detail.

So, as quoted above, mere listening etc.,

is knowledge only to utter and not to realize. Daughter Sapna is trying to divert the attention of loving readers towards spirituality. So, we will have to know first the definition of spirituality. Nowadays, there are several definitions of spirituality but God preaches in Vedas that only one path existed, exists and shall exist by which the definition of one God and His eternal worship is attained and that one path is to follow the instructions of four Vedas, which emanate directly from God and not from anybody else. ***But to our bad luck that in the end of previous three yugas and beginning of kalyug, about since more than five thousand years, people have ignored Vedas and have chosen their own unauthentic ways of worship for one reason or the other.*** You see, there is lot of difference between earth and sky, which can never be fulfilled. So, is the difference between Vedas, which emanate directly from God and other present paths, which can also never be fulfilled. So, we must determine, based on the study of Vedas that Vedic path made by God Himself is the only eternal and immortal truth, which is beneficial for all humans and gives complete peace and long, happy life. Therefore, the eternal and indestructive definition of spirituality is to follow Vedic path under guidance of learned acharya, who knows Vedas and Ashtang yog philosophy.

It is a dire necessity that we follow Vedic path only, in the present scenario, to attain happiness, good health, glory, harmony, comfort, hope, inner calm and peace etc., in human life, otherwise we will have to face great difficulties, problems and grave sorrows. We will have to gain the knowledge of eternal truth, briefed by God Himself in Vedas; God also being a true entity. And destructible knowledge of the world (mankind) lacks truth. So, we have to decide whether we choose eternal truth or destructible matters.

Based on Vedic knowledge, everybody will have to know that if anyone follows the Vedic path and worships accordingly then the best goals like physical and mental fitness mentioned by Dear daughter Sapna, could be achieved, otherwise not. Because to follow Vedic path is an advice by Almighty and omnipresent God and not by any other human beings. At this juncture, where we have attained peace; worries, frustrations, illness etc., will be faced and removed happily without any kind of disturbance in the mind, by Vedic spiritualism.

In the end, we will have to deeply consider that exclusively (one and only) the spiritualism will not solve the purpose to live upon since we need food, shelter, education for ourselves and family to survive with dignity, for which health and wealth is required.

Therefore, we will have to achieve progress in worldly materialism, science etc., simultaneously. That is why, God preaches in Yajurveda mantra 40/2 that to get long happy life, a person should discharge his pious duties (should do hard work to earn money) according to Vedas. The idea of the mantra is that a person while discharging his duties according to the Vedas, leaving behind the laziness, should earn money to live upon and sustain the family. In view of the above, it concludes that we must attain progress in spiritualism as well as worldly materialism simultaneously, according to Vedic preach. **VIV**

मैं और मेरी लेखनी

डॉ. वीना राज गुप्ता

भूमिका– प्रस्तुत कविता मैंने अपने गुरु जी स्वामी रामस्वरूप योगाचार्य जी जिन के सान्निध्य में मैं सन् १९८३ में आई, परिवार सहित गुरुजी से दीक्षित हुए, उन्हें उनके 83वें जन्मदिवस पर सादर भेंट की है। गुरु जी के विषय में कुछ भी लिखना–कहना असंभव सा प्रतीत होता है क्योंकि मेरे अपने अनुभव के अनुसार उनका जीवन और उनके अंदर का ज्ञान, सागर से भी गहरा एवं गंभीर है जिसे मैंने गागर रूपी खुली कविता में अपने आत्मिक उद्गारों को लिपिबद्ध करने का एक प्रयास किया है। लेखनी क्या लिखेगी, क्या कहेगी, यह मेरे मन में उभरते आत्मिक उद्गार और उन परम गुरु परमेश्वर की कृपा ही जानें।

जैसे ही मैंने अपने साहित्य के पिटारे से लेखनी उठाई
कुछ कहने को कुछ लिखने को ज़रा थोड़ी सी आगे बढ़ाई, लेखनी झट से बोल आई
फिर गुरुजी के जन्मदिवस की क्या है तैयारी बनाई,
जिनके कारण आप सबकी ज़िंदगी एक नए जीवन में है उभर आई,
उनकी प्रशंसा में एक गीत गाना चाहिए
अपने साहित्य से कुछ नया लाना चाहिए।
मैं घबराई लेखनी से बोली गुरुजी की प्रशंसा, तुम्हें मालूम हैं गुरुजी
वेद के ज्ञान से धनवान् हैं, परंतु अपनी प्रशंसा सुनने को ना तैयार हैं।
यह जान लो कि उनकी प्रशंसा में लिखी मेरी अनेक कविताओं का स्थान कूड़ेदान में है।
(गुरु जी को अपनी प्रशंसा सुनना कदापि पसंद नहीं।)
काश मेरी यह कविता ''वेद ईश्वरीय वाणी'' पत्रिका में छप जाए, तो मेरी भी आस पूर्ण हो जाए
कि मैं गुरुजी की प्रशंसा का गीत गाती हूँ।
सुख दुख में समान रहना, गुरुजी की प्यार डांट को खुशी से सह जाना,
क्या तुम यह सब भूल आई
लेखनी से प्रोत्साहन पा मैंने कलम आगे को बढ़ाई
हे गुरुवर! आपसे ज्ञान पाकर मैंने कुछ ऋग्वेद मन्त्रों की जानकारी पाई
ऋग्वेद में प्रभु ने पदार्थ विद्या, वेद ज्ञाता गुरु महिमा, अपनी महिमा,
पहचान और गुणों की खान है बताई
और सामवेद में साम गान, यज्ञ, योगाभ्यास आदि भक्ति है बताई,
अब उन सब से प्रोत्साहित हो मैंने भी, अपनी कलम है आगे बढ़ाई
आओ वेद मंदिर योल चलें।

जहां है वेदों का अमूल्य खज़ाना, लुप्त होती वैदिक संस्कृति को हमने हैं यहां जाना–पहचाना
आओ वेद मंदिर योल चलें।
इस मंदिर के स्वामी हैं स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य', मुख पर उनके तेज विराजे, ज्योतिपुंज नयन में भासे
बहुतों ने उनके शरीर, आँख और चेहरे से ज्योति पुंज निकलते देखा
और मुख से उनके ओजस्वी, तेजस्वी वेदवाणी को भी सुना।
कभी बारिश से रास्तों का मिट्टी से भर जाना, और बिना ज़मीन पर पाँव लगाए गुरुजी का उन्हें लांघ जाना
ऐ लेखनी! उनकी तपस्या के हैं हम सब दीवाने, ऋषिकेश के भयंकर जंगलों की गुफा में दीक्षा पाई, पास था उनके एक चम्मच, मिट्टी का बर्तन, गिलास और कढ़ाई,
उसी में उन्होंने दाल, सब्जी और चाय है बनाई, उनके गुरुजी ने उन्हें सिर्फ एक लंगोटी पहनाई, शेष संसारी वस्त्रों से कर दी उनकी जुदाई
वह छोटा सा टाट का बिछौना। हर मौसम में उसी पर तपस्या और उसी पर सोना।
उसी झरने से पानी का लेना,
जहाँ था चीते–शेरों के पानी पीने का ठिकाना,
गुरु जी के पानी पीने और नहाने का वही एक ही था आशियाना
चीते का उनको देखकर मुंह फेर कर दूसरी तरफ चले जाना
खूंखार कुत्तों का उनके आगे सिर झुकाना
तपस्या करते गुरुजी के आसन पर सांप का आना
और कुछ क्षण बाद उसे वहां मृत पाना।
ऐ लेखनी! उनकी तपस्या तो है एक अलौकिक ग्रंथ का उभर के आना,
पर तू अब इतना ही सुन कर शांत हो जाना
आओ वेद मंदिर योल चलें।
फिर लेखनी पूछ उठी, ऋषिकेश के घने जंगलों में रहने वाले एकांत वासी ऋषिवर को फिर संसार का रास्ता किसने दिखाया।
अपने गुरु बाबा बनखंडी दास जी की आज्ञा को उन्होंने निभाया।
तत्पश्चात् इन्होंने विश्व को वेदों का मार्ग दिखाया, ईश्वर प्रदत्त चारों वेदों से हमें परिचित कराया।
ईश्वर भक्ति को हमें वेदों से परिचित कराया
सृष्टि रचना का रहस्य बताया
वेदों का ज्ञान–विश्व का संविधान सा ही है।
इस रहस्य को हमें ठीक–ठीक समझाया, आओ, वेद मन्दिर, योल चलें।

VIV

गुरु-शिष्य संवाद

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

अक्तूबर का महीना शरद् ऋतु का अभिनन्दन करता है। वेद विद्या को ग्रहण करने की आशा से, इस शरद् ऋतु में भी जिज्ञासु जन गुरुकुल में, विद्या दान करने वाले, एक बड़े कक्ष में एकत्रित हुए बैठे हैं। उसी समय माननीय आचार्य जी ने कक्ष में प्रवेश किया तथा आचार्य को देखकर सभी जिज्ञासु शिष्य उठ खड़े हुए और दोनों हाथ जोड़कर आचार्य जी को प्रणाम करके अपने–अपने स्थान पर शांति–पूर्वक बैठ गए। आचार्य जी ने अपना स्थान ग्रहण करके सोमेन्द्र की ओर संकेत करके, उससे पूछा–

आचार्य– हे सोमेन्द्र!

वर्तमान में आम जनता वेदों के प्रति यह कहती सुनाई देती है कि वेद कठिन हैं। और ऐसा कहकर आम जनता वेदों को अनदेखा सा कर देती है। इस विषय में अपना विचार कहो।

सोमेन्द्र– प्रणाम, आचार्य!

इस विषय में ईश्वर से उत्पन्न अनादि ***ऋग्वेद मन्त्र 10/71/4*** में भी ईश्वर ने यह उपदेश दिया है कि कोई एक मनुष्य तो लिपि रूप वेद वाणी को आँख से देखता हुआ भी नहीं देखता क्योंकि उस मनुष्य को दिव्य वाणी वेद के अक्षर का ज्ञान नहीं है। कई एक मनुष्य ऐसे भी हैं जो शब्द ब्रह्म अर्थात् शब्द रूप वेद–वाणी को सुनते हुए भी नहीं सुनते क्योंकि वे लोग वेद मन्त्रों का अर्थ नहीं जानते।

हे आचार्य! उक्त दोनों विषयों का ज्ञान इसलिए नहीं होता क्योंकि वेदानुसार लोग जिज्ञासु बनकर चारों वेदों के ज्ञाता, अष्टाँग योगी, विद्वानों के पास वेद विद्या सुनने नहीं जाते और व्यर्थ में कह देते हैं कि वेद कठिन हैं। चारों वेदों के अनेक मन्त्रों में ईश्वर ने यही आदेश दिए हैं कि यह निराकार ईश्वर से

उत्पन्न अविनाशी वेद वाणी है और ईश्वर ने यह आदेश दिया है कि यह वाणी विद्वानों से सुनी जाती है तब इसका ज्ञान अवश्य हो जाता है। वर्तमान में वेदवाणी का सूर्य अस्त होने का कारण एक ही है कि आम जनता चारों वेदों के ज्ञाता, विद्वानों के पास वेद वाणी सुनने नहीं जाती अपितु वेद ना जानने वाले, वेद विरोधी सन्तों की संगत में जाकर अप्रमाणिक असत्य वाणी को सुनकर अपना यह लोक और परलोक, दोनों लोकों को बिगाड़ लेती है और दुःखी रहती है। ***सामवेद मन्त्र 50,*** यही उपदेश कर रहा है–

''श्रुतम् तपः''

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर द्वारा उपदेश की हुई वेद वाणी को विद्वानों से सुनना और उसपर आचरण करना परमावश्यक है।

अथर्ववेद मन्त्र 1/1/4 में ईश्वर का स्पष्ट उपदेश है कि हम आचार्य की सेवा करके उसके समीप, नमन करते हुए, आसन ग्रहण करके बैठें और सदा वेद ज्ञान सुनने की प्रक्रिया से जुड़ें और इस ज्ञान को सुनने की प्रक्रिया से हम कभी अलग ना हो जाएँ।

मन्त्र 2 में स्पष्ट किया है कि आचार्य वेद वाणी का स्वामी है। अब यदि कोई आचार्य के पास वेद सुनने नहीं जाता तो यह अति सरल वेद वाणी उसे कभी भी प्राप्त नहीं होगी और वह अज्ञान–युक्त अन्धेरे में भटकता हुआ, दुःखों के समुन्द्र में डुबकी लगाता रहेगा। ***अतः ईश्वर का उपदेश सभी मनुष्यों को है कि वे, चारों वेदों के विद्वान् के पास जाकर नित्य वेदवाणी सुनें क्योंकि वेदवाणी चेतन ब्रह्म से उत्पन्न चेतन ब्रह्म सी ही है।*** और यह वेद वाणी पुरुषार्थी जिज्ञासु के लिए अपनी आत्मा को खोल देती है अर्थात् सत्य स्वरूप को ऐसे खोल कर रखती है जैसे कोई पतिव्रता नारी अपने को पूर्ण रूप से पति को समर्पित कर देती है। ऐसा ***ऋग्वेद मन्त्र 10/71/4*** में परमात्मा का उपदेश है।

<u>आचार्य</u>– शाबाश, बेटा सोमेन्द्र! आपने अति उत्तम उत्तर दिया है।

हे बेटी, ऋचा! आप बताएँ कि ***किस वेदों को जानने वाले, अति श्रेष्ठ विद्वान् की वह कौन सी नीति है जिससे सुखों की प्राप्ति होती है और किस बुद्धि से सुखों की प्राप्ति होती है? कौन मनुष्य आप विद्वान् के बल को यज्ञ करके प्राप्त होता है और हम सब मनुष्य किस मन से आपके लिए क्या दान दें?***

<u>ऋचा</u>– प्रणाम, आचार्य! हम सब मनुष्यों को यज्ञ में विद्वान् एवं परमेश्वर से ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए कि आप अर्थात्

नित्य वेद सुनकर, यज्ञ करके, मन–बुद्धि को शुद्ध करके ज्ञान द्वारा आपकी तन, मन, धन, प्राण से सेवा करें–दान करें। हे आचार्य! कहा भी है कि वैदिक ज्ञान को जानने वाले विद्वान् के पास जाकर, उनसे वेद सुने बिना कोई ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

आचार्य– शाबाश बेटी, ऋचा! आपने अति सुन्दर, ज्ञानवर्धक, वैदिक उत्तर दिया है।

हे ओमेन्द्र! आप बताएँ कि परमेश्वर कहाँ विद्यमान है?

ओमेन्द्र– प्रणाम आचार्य! ***यजुर्वेद मन्त्र 40/1*** में स्पष्ट कहा है कि यह समस्त ब्रह्माण्ड जो है, इसमें तीनों लोकों अर्थात् द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक एवं पृथिवी लोक तथा सृष्टि में जड़ और चेतन, दो जगत् हैं, वे सर्वशक्तिमान् परमात्मा के द्वारा व्याप्त हैं अर्थात् ईश्वर जड़ एवं चेतन जगत् (चेतन जगत् जीवात्माओं को कहते हैं और जड़ जगत् प्रकृति से बनी समस्त सृष्टि है) दोनों में सर्वव्यापक है। तैत्तिरीयोपनिषद् में भी वर्णन मिलता है कि प्रलय काल समाप्त होने के पश्चात् परमेश्वर ने जड़ प्रकृति को लेकर यह संसार रचा और रचने के पश्चात् स्वयं समस्त संसार में प्रवेश कर गया। ***ऋग्वेद मन्त्र 1/164/20*** में भी प्रमाण है जिसमें कहा कि

परमेश्वर एवं विद्वान्, हमारी बुद्धि शुद्ध करने के लिए श्रेष्ठ वैदिक ज्ञान दें, उत्तम वैदिक कर्म एवं बल दें जिससे हम वैदिक साधना करते हुए आपको जानें–समझें और आपको प्राप्त करके सदा सुखी रहें। क्योंकि सच्चे हृदय से प्रार्थना किया हुआ परमेश्वर एवं सेवा किया हुआ धर्मात्मा, वेद का ज्ञाता, विद्वान् ही मनुष्यों को सुख देता है, अन्य नहीं। इसलिए चारों वेदों में केवल वैदिक विद्वान् के पास जाने का ही उपदेश है। ऋग्वेद में कहा है कि मनुष्य धार्मिक, वैदिक विद्वानों का संग पाकर और बुद्धि को शुद्ध करके ही परमेश्वर एवं सुख को प्राप्त होता है। अन्य कोई रास्ता नहीं है। क्योंकि ऋग्वेद कहता है कि पूर्ण वेदों का ज्ञाता, विद्वान् ही धार्मिक होता है। बिरला कोई जिज्ञासु ही वेद ज्ञाता, विद्वान् की संगत करके वेद सुनकर, यज्ञ/अग्निहोत्र करके तुझ विद्वान् को, तेरे बल को, स्वभाव को यज्ञ द्वारा जानकर आपको प्राप्त होता है और हम लोग

परमेश्वर सब जीवात्माओं में विद्यमान है। भाव यही है कि परमेश्वर जड़ जगत् एवं चेतन जगत्, दोनों में सर्वव्यापक है (उसको प्राप्त करने के लिए ही हमें मनुष्य का शरीर मिला है।)

ऋग्वेद मन्त्र 10/22/1 में यह भी अति सुन्दर कहा है कि वह परमात्मा ऋषियों—वेद ज्ञाता, विद्वानों के निवास—स्थान में, उनकी बुद्धि में भी वेद वाणी द्वारा साक्षात् किया जाता है। हे आचार्य! यदि किसी जिज्ञासु/अधिकारी को जब वेद विद्या का ज्ञान होता है और वह जिज्ञासु वेद में कही स्तुति, योगाभ्यास आदि का ज्ञान आचार्य से लेकर उसका अभ्यास करता है, विद्या को आचरण में लाता है तब ***योग शास्त्र सूत्र 1/14*** के अनुसार वह अभ्यास लम्बे समय तक निरन्तर श्रद्धा एवं सत्कार सहित अन्तिम साँस तक किया जाता है तब वह दृढ़ अवस्था वाला होता है और लोक—परलोक को सुधार देता है। तब ईश्वर प्राप्ति की सम्भावना दृढ़ हो जाती है।

आचार्य– शाबाश बेटा, ओमेन्द्र! आपका वेदाध्ययन अति सुन्दर है और आप वेदानुसार साधना भी करते हो, इसकी मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है।

परमेश्वर एवं पुरातन तथा नूतन ऋषियों का यह मत सत्य है—अचल है कि आचार्य द्वारा वेद जाने बिना प्रथम तो यही नहीं जाना जा सकता है कि ईश्वर किसे कहते हैं। पुनः ईश्वर प्राप्ति की इच्छा करना व्यर्थ है।

VIV

पौर्णमासी और अमावस्या

की आगामी तिथियाँ (अक्तूबर 2023 – मार्च 2024)

अक्तूबर 2023	नवम्बर 2023
14 - अमावस्या 28 - पौर्णमासी	13 - अमावस्या 27 - पौर्णमासी

दिसम्बर 2023	जनवरी 2024
12 - अमावस्या 26 - पौर्णमासी	11 - अमावस्या 25 - पौर्णमासी

फरवरी 2024	मार्च 2024
9 - अमावस्या 24 - पौर्णमासी	10 - अमावस्या 25 - पौर्णमासी

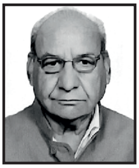

पी.आर.मेहरा
रिटायर्ड अध्यापक
(के.वी., योल)

प्रसुव यज्ञम्

''प्रसुव''– प्रेरणायुक्त कर दें,
''यज्ञम्''– यज्ञ करने की।

जीव इस मंत्र में ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि आप हमारे यज्ञ को बढ़ाएँ, बार–बार यज्ञ करने की प्रेरणा दें।

वेदों में असंख्य प्रकार के कर्मों को करने के लिए कहा गया है। प्राणी केवल वेदोक्त शुभ कर्म ही करता रहे, ऐसी प्रेरणा ईश्वर हमें देते रहें।

यजुर्वेद अध्याय 30 का पहला मन्त्र, जिसे नित्य अग्निहोत्र करते समय बोला जाता है, इस मंत्र में जीव ईश्वर से प्रेरणा युक्त वचन बोल रहा है कि हे ईश्वर! ***(देव सवितः)*** हम मनुष्यों को नित्य यज्ञ करने की सुमति प्रदान करें। हम सभी प्राणी नित्य अग्निहोत्र एवं यज्ञ करें, ऐसी प्रेरणा दो। दिन–प्रतिदिन हमारे ***(यज्ञम्)*** यज्ञ को आप बढ़ाएँ ***(प्रसुव),*** हमें ऐसी प्रेरणा देते रहें ताकि हमारा अग्निहोत्र एवं यज्ञ कभी भी नहीं छूटें। आगे मन्त्र का भाव है कि जो यजमान यज्ञ को करवा रहा है, उसे, हे प्रभु! आप सभी प्रकार के सुखों से भर दो। जीव प्रार्थना कर रहा है– ***(दिव्यः गन्धर्व)*** ईश्वर से, जिसने पूरी पृथिवी को अपने में धारण कर रखा है, वह ***(नः)*** हमारी ***(केतपूः)*** बुद्धि को ***(पुनातु)*** पवित्र कर दे।

भाव यह है कि बुद्धि शुद्ध होगी तो कोई भी प्राणी पाप कर्म करने के लिए प्रेरित नहीं होगा। हमेशा शुभ वेदोक्त कर्म करने की प्रेरणा से अशुभ कर्म करने लायक नहीं रहेगा। अतः यज्ञ से ही हमारी वाणी में मधुरता आने लगेगी। ***यजुर्वेद मंत्र 30/1*** इस प्रकार है–

''ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं
प्रसुव यज्ञपतिम् भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतम् नः पुनातु
वाचस्पतिर्वाचम् नः स्वदतु ॥

हर प्राणी में क्षण–प्रतिक्षण अच्छी या बुरी प्रेरणा किसी भी प्रकार के कर्म करने के लिए सदा उठती रहती है। यदि प्रेरणा अशुभ उठती है तो जीव का उद्धार कभी नहीं हो सकता। ऊपर मंत्र में यज्ञ को बढ़ाने की प्रेरणा के लिए ईश्वर से कहा जा रहा है कि आप (ईश्वर) केवल शुभ कर्म–यज्ञ, अग्निहोत्र इत्यादि करने के लिए हमारी बुद्धियों को पवित्र करें ताकि पापयुक्त, अवैदिक कर्मों से हम मुक्त हो सकें।

यजुर्वेद के पहले अध्याय के पहले ही मंत्र में कहा– ''ओ3म् इषे त्वोर्जे.... प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण... पशून् पाहिं। यह मन्त्र सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम कर्म–यज्ञ करने के लिए प्रेरित कर रहा है। नित्य प्रातः–साँय अग्निहोत्र करना तथा ऋषि निवास स्थान में जाकर ब्रह्म–ऋषि, मनीषी विद्वान् के सान्निध्य में बैठकर यज्ञ करना ही वेदोक्त शुभ कर्म कहा है। यज्ञ करने की प्रेरणा तथा यजमान बनना, यह मन्त्र उपदेश दे रहा है। उसके करने से प्राणी के असंख्य रोगों का नाश होना निश्चित कहा है। पशुओं की रक्षा हेतु भी यह मन्त्र संदेश दे रहा है। इस संसार में प्राणी के लिए असंख्य प्रकार के कर्म करने के लिए कहा गया है। ईश्वर मनुष्यों के लिए चारों ही वेदों में केवल शुभ कर्म करने के लिए कह रहा है। अशुभ कर्म करने से प्राणी असंख्य नीच योनियों में मृत्योपरान्त चला जाता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

यजुर्वेद कर्म काण्ड का ज्ञान देने के लिए ईश्वर से निकला है तथा असंख्य कर्म करने की प्रेरणा दे रहा है। जैसे कि–

1. ***मंत्र 1/5*** में ''अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि'', ऐसा कहा है।
2. ***यजुर्वेद मन्त्र 11/57*** में कहा– ''मखस्य शिरोऽसि''। ''मख'' अर्थात् यज्ञ को सिर पर धारण करने की प्रेरणा ईश्वर दे रहा है।
3. ***यजुर्वेद मन्त्र 4/15*** में कहा–''पुनः मनः पुनः आयु आगन् पुनः प्राणः पुनः आत्मामऽ आगन् पुनः चक्षुः पुनः श्रोत्रम् आगन्...।

इस मंत्र में ईश्वर से हम प्रार्थना कर रहे हैं कि पुनः यही मानव शरीर मुझे प्राप्त हो।

हमारे श्रद्धेय स्वामी रामस्वरूप जी, वेदाचार्य एवं योगाचार्य अपने दैनिक प्रवचनों में प्रायः यज्ञ करने की शिक्षा देते आ रहे हैं। चारों वेदों में यज्ञ करने की प्रेरणा दी जा रही है। परंतु इस पृथिवी पर वर्तमान में यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्म नहीं के बराबर हो रहा है। स्वामी जी प्रायः कहते हैं कि पूरे संसार की आधी आबादी भी यदि नित्य अपने घरों में अग्निहोत्र करे और ब्रह्म–ऋषियों, योगियों के निवास–स्थान पर यज्ञानुष्ठान का आयोजन करना शुरू करे तो निश्चय ही संसार में जो इस समय सर्वनाश

हो रहा है, अकाल मृत्यु हो रही है, महामारी जैसे रोग लोगों के जीवन खा रहे हैं; इन पर कुछ हद तक विराम लग सकता है अन्यथा पाप, व्यभिचार, गृह युद्ध, स्त्री जाति का अपमान आदि अन्य कई पाप कर्म पनपते ही रहेंगे और प्राणी का जीवन कभी भी सुखमय नहीं हो पाएगा।

अन्ततः यही कहूंगा कि प्रत्येक प्राणी अभी से प्रण ले कि जैसे जीने के लिए अन्न आवश्यक है उसी प्रकार ***''यज्ञ''*** करने को अपने जीवन में उतारें। तभी अपना और पूरे विश्व का कल्याण हो सकता है।

संपादक के विचार

श्री पी.आर.मेहरा जी ने यज्ञ के विषय में उत्तम विचार लिखें है और यह विचार प्रेरणायुक्त एवं आचरण में लाने योग्य हैं। ***वेदों में कहा यह अनादि सत्य है कि यज्ञ एक महान् तप है और जो भी नर–नारी श्रद्धा से यज्ञ करते हैं, उन्हें इस लोक एवं परलोक अर्थात् अगले जन्म में भी सुख प्राप्त होता है और जीवात्मा मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर होती जाती है क्योंकि यज्ञ करने वाले के पिछले जन्मों के पाप भी नष्ट होते चले जाते हैं।***

यजुर्वेद मन्त्र 30/1 में, जैसा कि श्री मेहरा जी ने कहा है, कि हम सब नर–नारी परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें यज्ञ करने की प्रेरणा देते रहें, यह सत्य है। जो यजमान है, जिसके बिना भी यज्ञ नहीं होता, उस यजमान को सुख दें, उसके कष्टों को दूर करें। आगे कहा कि हे शुद्ध–स्वरूप परमेश्वर! आप संसार के धारण करने वाले और विज्ञान को भी पवित्र करने वाले हैं। आप हमारे विज्ञान ***(विशेष ज्ञान)*** को पवित्र करें आप वेद वाणी के धारण करने वाले एवं पालक हो। आप हमारी वेद ज्ञान से युक्त वाणी सुनें। तो ईश्वर एवं गुरु की कृपा है कि हम जिज्ञासु जन नित्य यज्ञ एवं अग्निहोत्र में यह मन्त्र उच्चारण करते हैं और इस प्रकार जिज्ञासु नर–नारी नित्य परमेश्वर से उपरिलिखित प्रार्थना करते हैं और निश्चय ही ईश्वर एवं आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। मन और बुद्धि वेद सुनकर, यज्ञ एवं अग्निहोत्र करके तथा वेद में वर्णित ज्ञान सुनकर पवित्र हो जाती है और जब जिज्ञासु वेदों में कहे ज्ञान को सुनता है तब उस ज्ञान को सुनकर उसका मन और बुद्धि पूर्णतः शुद्ध हो जाते हैं। तब स्वतः ही उस जिज्ञासु द्वारा सदा शुभ कर्म होते हैं, पाप कर्म नहीं होते। इस प्रकार वह जिज्ञासु वेद एवं वेद ज्ञाता, ऋषि का आश्रय लेकर परमेश्वर की प्राप्ति में अग्रसर होता चला जाता है और एक दिन परमात्मा को पा ही लेता है।

यहाँ यह विचार लिखना आवश्यक है कि आम जनता भरमाई गई है और उन्हें यह असत्य कहा गया है कि वेद कठिन हैं। वेद हमारी मातृभाषा है और माता अपने बच्चे को सरलता से सब कुछ सिखा देती है। परमेश्वर का ***ऋग्वेद मन्त्र 10/71/4*** में यह भाव है कि कोई भी मनुष्य वेदवाणी को कठिन ना कहे। मन्त्र में उपदेश है कि लिपि अर्थात् दिव्य संस्कृत भाषा में उत्पन्न अक्षर द्वारा उच्चारण की हुई वाणी को आँख से देखता हुआ भी नहीं देखता क्योंकि उसे अक्षर/लिपि का ज्ञान नहीं है इसलिए उसे यह अति सरल, दिव्य वेदवाणी कठिन अनुभव होती है। जबकि चारों वेदों में ईश्वर का उपदेश है कि प्रत्येक नर–नारी चारों वेदों के ज्ञाता, विद्वानों से यह वाणी सुनें, पढ़ें नहीं। क्योंकि परमेश्वर ने पढ़–लिखकर यह वाणी पुस्तक रूप में किसी को नहीं दी और ना किसी को मुँह से बोल कर सुनाई। क्योंकि परमेश्वर निराकार है वह बोल नहीं सकता ना लिख सकता। हाँ! बिना बोले, बिना लिखे ही उसने हमको अनन्त ज्ञान दिया है। प्रत्येक पृथिवी की रचना के आरम्भ में ही ईश्वर अपनी सामर्थ्य से यह वेदवाणी चार ऋषियों के हृदय में चार वेदों के रूप में, बिना बोले बिना लिखे उत्पन्न कर देता है ***(देखे ऋग्वेद मंत्र 10/181/1, 2)।***

पृथिवी पर वेद मन्त्रों के अतिरिक्त कोई भी वाणी चेतन रूप में नहीं है। अतः ईश्वर ने इसे केवल

विद्वानों से सुनने की आज्ञा दी है। पढ़ने–लिखने की नहीं दी। अतः आम जनता तो संहिता में छपे हुए वेद मन्त्रों को देखकर (जैसा ऊपर ऋग्वेद मन्त्र 10/71/4 में कहा) अवश्य भयभीत हो जाएगी और कहेगी संस्कृत कठिन है, वेद कठिन है, हमें सरल भाषा में चाहिए; ऐसा कहकर वेद मन्त्रों का त्याग कर देगी। अतः सब नर–नारी ईश्वर की आज्ञा को समझें और विद्वानों से वेद सुनें, लिखे–पढ़ें नहीं। पिछले तीन युगों में भी जनता ने यह वेद वाणी विद्वानों से केवल सुनी है, पढ़ी–लिखी नहीं और जनता को सुन–सुनकर वेद का ज्ञान हो गया, स्वयं ज्ञानी बने और औरों को भी ज्ञानी बना गए। जो विद्वानों से वेद वाणी के अर्थों को जानता है, वह ही वेद वाणी के लाभ को प्राप्त करता है, अन्य नहीं।

VIV

SUPERSTITION

Seema Dogra

In the Kingdom of Vijayanagar, Krishnadev Rai was the king. There lived a poor man Ravi, rumour was that if one saw Ravi in the morning, they would be cursed and not be able to eat the whole day. In order to test this, King asked him to come and stay in the Palace.

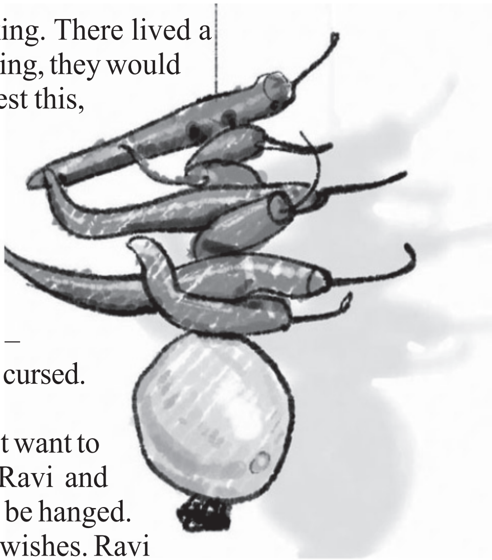

Ravi was made to stay in room right next to the king. The next morning, the King walked to Ravi's room, so he could look at him first thing and test . It just so happened that at lunchtime, the King saw a fly in his meal and asked the cook to take it away and prepare a new lunch. By the time lunch was served again, the King had lost his appetite and realised that this rumour was true – seeing Ravi's face first thing in the morning did cause people to be cursed. He didn't wish this for his people and ordered that Ravi be hanged.

Ravi's wife goes to ***Tenali Raman*** for help as she doesn't want to lose her husband. Hearing the story, Tenali Raman goes to Ravi and whispers something into his ear, right before he is to be taken to be hanged. On the day of his punishment, guards ask Ravi if he has any last wishes. Ravi says he wants to give the King a note that he must read before the hanging. In the note were the words Tenali Raman had whispered – 'If seeing Ravi's face, one loses their appetite; then a person who sees the King's face, first thing in the morning, is destined to lose his

life. Who is, therefore, more cursed – Ravi or the King?'

Reading this, the King understood his mistake and set Ravi free! To cut the story short, don't give into superstitions. Unlike Tenali Raman, King took time to understand his fault. ***But in our day today life, superstitions play an important role.*** There are very few people like King Krishadev Rai who would understand and follow the path of reality not superstitions. For instance, in our lives, every day you tend to see superstitions around you. Dawn starts with, florist selling garlands and 'nimbu mirchi' hanging in thread for shops or houses.

If a cat crosses your path, it is believed that you are bound to have something negative during the day. Crow is crowing at your door gives the signal, in advance that guests are coming to your place. You can't sneeze before starting any work, this is considered as a bad omen. Itching palm means money is on the way. Keeping red handkerchief in the pockets brings luck. The list is endless. ***Superstitions and beliefs of Indian people are contradictions to modern science.*** Some beliefs and practices, which are considered superstitious by some, may not be considered so by others. The gap, between what is superstitious and what is not, is very difficult to asses in India .Generally, it is considered that superstitions grow due to lack of education but that is not the case ,as practice of lemon chilli totem to serious crimes like witch burning, sacrifice of animals etc are seen all around.

Some of the superstitions are centuries old and they have been followed from one generation to other especially in remote rural areas. You cannot stop or put them under the law. People tend to follow them religiously and they have become part of their lives.

Superstitions can be considered good or bad in different ways.

Twitching eyes superstition in Indian, households.

This one has a different meaning in different cultures. The scientific reason is that this twitching is caused due to alcohol, stress, allergies, strain or just dry eyes. But as a belief twitching eyes means good luck.

Everyone can't be intelligent and have farsightedness like Tenali Raman.

Believing in superstitions is not healthy; people who are superstitious fail to solve their problems in life. They always live in ignorance. Women tend to be more superstitious as compared to

men, they tend to follow all best possible shortcuts to get desired results by doing various superstitious stuff at home.

In a way superstitions in our society are menace and we have to live with it. People may become wise and do not follow the superstitions, but one cannot eradicate it.

For many people, superstitions can reduce stress and help to build positive mental attitude. When a person is unsure of an outcome, he or she may find ways to control it even if it's only in mind.

No matter what is the outcome, this is the fact that people end up doing wrong things while practicing superstitions in their lives.

We have to look out for better solutions to our problems rather than giving in to superstitions!

Further insight by the Editor

Daughter Seema has very well produced the picture of superstitions before the loving readers. If we throw an eye on the eternal knowledge of Vedas, which are originated in the heart of four Rishis in the beginning of the creation, then we find that if anyone's views tally with any ved mantra then the views are considered true otherwise false. So, if the present views about superstitions do not tally with Vedas, then straightaway a true person must declare them false. But the problem of the present scenario is that most of the people of the world are not listening to Vedas from a learned acharya as was traditionally practiced in earlier three yugas instead are happily fond of listening to so-called preach from man-made granths ignoring divine preach of Vedas, which emanates directly from God. ***(Refer Rigved mantras 10/181/1,2).***

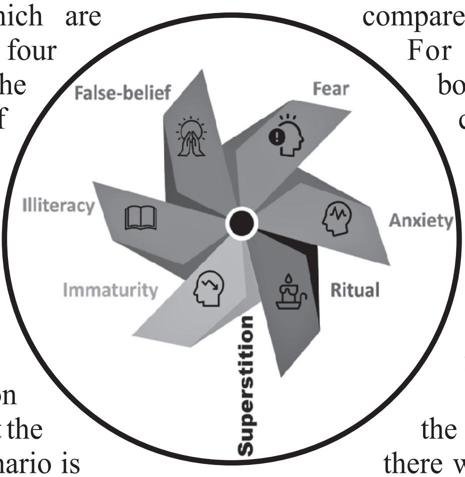

There is lot of difference between knowledge of God given in Vedas and man-made preach/books; which can never be fulfilled; like that between earth and sky.

Carnivorous animals like lions etc. go to banks of a river to quench their thirst. This fact is very well known by poor deer, who is prey to the said animals. But the deer is thirsty and if he would not quench his thirst surely he will die. Therefore, deer makes up his mind to go to banks of river to take water, while highly risking his life. Similarly, an aspirant would only go to the learned acharya of Vedas to quench his thirst of gaining eternal vedic knowledge. It shall not be out of place to mention here that at present, mostly people are gaining knowledge from man written books/so-called preach, which is all in vain as compared to vedic knowledge.

For example- Man written books/so-called preach is not capable to destroy the illusion, which has been spread about superstitions. Instead, the same are responsible to propagate and popularise superstitions more and more.

If we throw an eye on the eternal wisdom of Vedas, there we find fundamental law of God, stated above that if anyone's views tally with Vedas those views is true otherwise false.

So, keeping in view the said law, the superstitions originated nowadays, in the absence of knowledge of Vedas and while indulging in illusion, are totally false because –

1.) Made by man and not by God.
2.) Do not tally with Vedas.

In view of the above, all learned of Vedas appeal to public to Revert Back to Vedas to destroy illusion and to be happy with family enjoying long, happy life. Therefore, all human-beings must remain away from superstitions, being against Vedas, superstitions are harmful to the extent of destroying human-life. For example- Several pandits have made their own rules about mangalik, kaal sarp dosh etc. This illusion has destroyed several lives of sons and daughters.

I remember an event of my life that an educated lady stated to me that a ghost/jin used to come on the bed of her old aged mother in the night and the ghost then used to rape her old mother, I was really surprised because the lady was educated and also used to listen to vedic knowledge. So, inspite of my vedic teachings, she stood by her statement.

Ultimately, I told her that I would accompany her to her mother's house. Her mother also repeated the views of her daughter and even they told about the bleeding on the bed. If you have studied Vedas, whole illusion would be destroyed within your intellect. As you repeatedly chant Gayatri mantra and pray to God to give you all vedic knowledge which destroys the illusion. So, they could not make me able to accept their false views. Then I preached that the problem is regarding facing the result of her mother's previous lives' bad deeds. I then advised them to arrange yajyen, if her mother's bad deeds are to be destroyed. Then the yajyen was organised and in the yajyen, I was chosen to preside as Brahma.

After completing the Yajyen, I advised the old lady that when the so-called ghost starts coming towards you, she should remember God and me as well.

The old lady did so and next day, she briefed me that the so-called ghost [because ghost's existence is false] as usual came towards her but for the first time, he returned back immediately and told that he would not spare her. So, again the ghost tried to come near her but what a wonder ghost was set on fire. Old lady then became alright. So, we must never accept the illusion/superstitions. ***Everybody should try to listen to Vedas to destroy illusion/ superstitions through vedic knowledge.***

VIV

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

कौन ईश्वर को प्राप्त करता है

अनेजदेकं मनसो जवीयो
नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्षत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो
मातरिश्वा दधाति ॥

(यजुर्वेद मन्त्र 40/4)

हे नर–नारियों! ***(एकम्)*** परमेश्वर एक है और वह ***(अनेजत्)*** अपनी अवस्था से कभी अलग नहीं होता अर्थात् परमेश्वर में हिलने–डुलने एवं कम्पन जैसे गुण नहीं है, वह अचल है, परमेश्वर ***(मनसः)*** मन की गति से ***(जवीयः)*** अति गतिशील–वेगवान् है ***(पूर्वम्)*** सबसे पहले पूर्ण है (अर्षत्) सर्वत्र होने के कारण, जहाँ–जहाँ मन जाता है, उससे पहले ही परमेश्वर वहाँ विद्यमान है ***(एनत्)*** इस परमेश्वर को ***(देवाः)*** चक्षु, मन आदि इन्द्रियाँ ***(न)*** नहीं ***(आप्नुवन्)*** प्राप्त होते हैं ***(तत्)*** वह परमेश्वर स्वयं ***(तिष्ठत्)*** स्थिर हुआ, अपने सर्वव्यापक गुण के कारण ***(धावतः)*** विषयों की ओर दौड़ने वाले अर्थात् विषयों की ओर आकर्षित होने वाले ***(अन्यान)*** ब्रह्म के स्वरूप से अलग जो अन्य मन, बुद्धि, वाणी इन्द्रिय आदि हैं, उन इन्द्रियों से वह ब्रह्म ***(अत्येति)*** प्राप्त नहीं होता क्योंकि परमात्मा इन्द्रियों से परे है; ***(तस्मिन्)*** उस सर्वव्यापक परमेश्वर में, जो हिलता–डुलता नहीं है ***(मातरिश्वा)*** अन्तरिक्ष में प्राण धारण करने वाले, वायु के समान जो जीव है, वे ***(अपः)*** कर्म को ***(दधाति)*** धारण करते हैं।

शब्दार्थ– हे नर–नारियों! परमेश्वर एक है और वह अपनी अवस्था से कभी अलग नहीं होता अर्थात् परमेश्वर में हिलने–डुलने एवं कम्पन जैसे गुण नहीं हैं, वह अचल है, परमेश्वर मन की गति से अति गतिशील–वेगवान् है, सबसे पहले पूर्ण है, सर्वत्र होने के

कारण, जहाँ—जहाँ मन जाता है, उससे पहले ही परमेश्वर वहाँ विद्यमान है। इस परमेश्वर को चक्षु, मन आदि इन्द्रियाँ नहीं प्राप्त होते हैं। वह परमेश्वर स्वयं स्थिर हुआ, अपने सर्वव्यापक गुण के कारण, विषयों की ओर दौड़ने वाले अर्थात् विषयों की ओर आकर्षित होने वाले, ब्रह्म के स्वरूप से अलग जो अन्य मन, बुद्धि, वाणी इन्द्रिय आदि हैं, उन इन्द्रियों से वह ब्रह्म प्राप्त नहीं होता क्योंकि परमात्मा इन्द्रियों से परे है; उस सर्वव्यापक परमेश्वर में, जो हिलता—डुलता नहीं है, अन्तरिक्ष में प्राण धारण करने वाले, वायु के समान जो जीव हैं, वे कर्म को धारण करते हैं।

भावार्थ– केवल वेद ज्ञान सुनने से ही हम ज्ञान को प्राप्त करते हैं– परमेश्वर को प्राप्त करते हैं– सुख को प्राप्त करते हैं, अन्य कोई मार्ग नहीं है। जैसे ऊपर लिखित मन्त्र में कहा है कि परमेश्वर एक है, इसी प्रकार ***ऋग्वेद मन्त्र 1/8/9,*** 10 में भी यही कहा है कि (इरज्यति) सब सुख देने वाला और सबके द्वारा पूजा करने योग्य वह परमेश्वर (केवलः) चेतन स्वरूप एक ही है अर्थात् परमेश्वर एक है जिसका वर्णन वेदों में है।

इन मन्त्रों का भाव यह है कि सृष्टि रचयिता, हम सबको और सृष्टि को पालने करने वाले दाता को छोड़कर अर्थात् इस एक परमेश्वर की उपासना को छोड़कर किसी अन्य देव की उपासना कभी नहीं करो। वेदों में जो वर्णित ईश्वर है, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई ईश्वर नहीं है और जब हम इस एक परमेश्वर को त्याग कर अनेक ईश्वर की पूजा करते हैं तो ***ऋग्वेद में स्वयं ईश्वर ने मन्त्र 10/125/4*** में कहा है कि जो वेदों में वर्णित ईश्वर को त्यागकर अन्य की—दूसरे ईश्वर को मानता है एवं उसकी पूजा करता है तो परमेश्वर उनको घोर दण्ड देता है। आज जीव दुःखी है तो इसका एक ही कारण है कि प्रायः हम ईश्वर से उत्पन्न चारों वेदों को त्याग चुकें हैं और इस प्रकार वेदों का सूर्य अस्त प्रायः हो गया है तथा हम अज्ञानी होकर अविद्या ग्रस्त होकर दुःखी हैं, चिन्ता ग्रस्त हैं, रोगी हैं एवं लड़ाई, दंगे—फसाद आदि अनेक कुकर्मों में फंसकर, दुःख को ही सुख मानकर और इस प्रकार दुःखों से प्रेम करके, उन्हें सुख मानकर सदा दुःखी रहते हैं। आज हम सचमुच बारूद के ढेर पर बैठे हैं। वेद ज्ञान के बिना यह अनादि वैदिक सत्य कभी भी समझ में नहीं आएगा कि ईश्वर अनादि है, सत्य है, सर्वत्र है, कायारहित है, सर्वशक्तिमान् है, अनादि काल से चारों वेदों का ज्ञान हम मनुष्यों के कल्याण के लिए समाज को देता आ रहा है, इत्यादि। परंतु हमारा दुर्भाग्य है कि जिस वेद ज्ञान के अभाव में मनुष्य (जीवात्मा) करोड़ों, अरबों जन्म लेकर भी ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकती, अज्ञानवश सदा दुःखी रहती है, उस वेद ज्ञान को हम त्याग बैठे हैं, पृथिवी पर अधर्म—अविद्या छा गई है। ईश्वर सबको प्रेरणा दे और पिछले तीन युगों

की भांति आज की जनता भी वेद ज्ञान को अर्जित करके, अपने पाप कर्मों को नष्ट करके परिवार सहित सुखी रहे।

ईश्वर के अनन्त गुणों में यह भी एक गुण है कि वह अनादिकाल से एक था, एक है और सदा एक ही रहेगा। जैसे ***गुरुबाणीं में भीं बहुत सुन्दर कहा है–***

''तुम निदान अटल सुल्तान''

अर्थात् है परमेश्वर! तू इस संसार का अटल राजा है। तुझ से अतिरिक्त कोई दूसरा ना था, ना है और ना होगा।

यजुर्वेद ने भी ऐसा ही कहा है–

''न जातः न जनिष्यते''

अर्थात् हे प्रभु! तुझसे अतिरिक्त अन्य कोई परमेश्वर आज तक ना पैदा हुआ है और ना कोई भविष्य में पैदा होगा। भाव यह है कि परमेश्वर एक था, एक है और एक ही रहेगा।

ईश्वर के अनन्त गुणों में यह भी एक गुण है कि ईश्वर सर्वव्यापक है अर्थात् सम्पूर्ण जगत् के कण–कण में समाया हुआ है। जगत् का कोई भीं स्थान ऐसा नहीं है जहाँ वह ना हो, हमें देख ना रहा हो, हमारे पाप–पुण्य को जानता ना हो और उन कर्मों के अनुसार हमें कर्म फल ना देता हो।

उदाहरणार्थ– एक साधक दिल्ली में है, एक साधक मुम्बई है और अनेक साधक अपने–अपने स्थान पर साधना कर रहे हैं। अतः उन सब साधकों की रक्षा करने, कल्याण आदि करने के लिए ईश्वर को दिल्ली से चलकर मुम्बई अथवा अन्य किसी भी अन्य स्थान पर जाने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वह सर्वत्र है, सर्वव्यापक है। उन सभी साधकों का कल्याण ईश्वर उसी स्थान पर कर देता है क्योंकि ईश्वर वहाँ भी उपस्थित है।

वह ईश्वर वेद ज्ञान प्राप्त, योगाभ्यासी, तपस्वी, योगी–ऋषि– मुनि आदि विद्वानों को ही प्राप्त होता है। इन्द्रियाँ यदि प्रकृति रचित पदार्थ, जैसे समस्त संसार में सोना–चाँदी, माया, मोह, काम–क्रोध आदि अनेक विषय/पदार्थ हैं, आकर्षित हो जाती हैं तो उन नर–नारी को ईश्वर कभी प्राप्त नहीं होता और ईश्वर के बिना ना ही उन्हें सुख–शांति प्राप्त होती है। ***ईश्वर केवल वेदों में है, यह स्वयं ईश्वर ने योगियों के हृदय में कहा और वेदों में कहा। अतः हम पुनः वेदमार्ग पर चलने का प्रयास करें।***

VIV

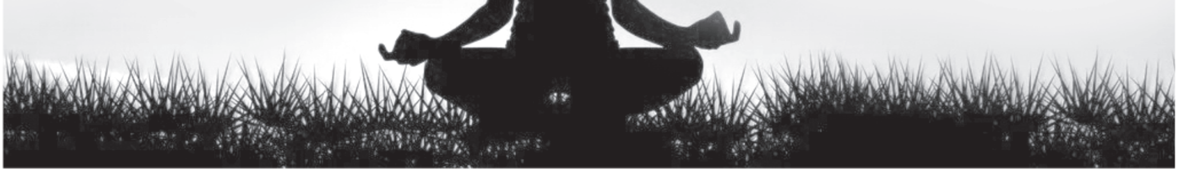

Mulethi

Sugandh 'Sudhi'

Another magical herb from the bag of Granny is Mulethi, an excellent special herb and full of Ayurvedic advantages. It has a distinctive sweetness that makes it unique. It has many uses so it is widely and commonly used in many Ayurvedic medicines. It has stunning health benefits which makes it more common in Indian kitchens. Mulethi is also one of the most effective herbs used during times of COVID-19. Especially Granny's kahwa. Mulethi is often taken in the form of stick and powder, but its kawa is very aromatic and extremely beneficial if boiled with other herbs. Some health benefits of Mulethi are as such :

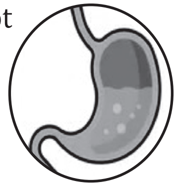

DIGESTION : Mulethi is known for its magnificent digestive properties. It not only helps in reducing inflammation but cures and prevents the digestive system from the formation of gas. Powder of Mulethi if taken with water helps in reducing and solving digestive problems. Mulethi has an enormous content of fiber which helps in solving the problem of constipation also.

SKIN IMPROVEMENT AND SKIN ISSUES : Many skin-related issues can be solved through the consumption of Mulethi powder which has anti-fungal, anti-viral, anti-bacterial, and anti-inflammatory properties. When powder of Mulethi is applied on scar–injury or acne helps in reducing the mark. Its consumption helps maintain the glow of the skin.

RESPIRATORY ISSUES : Mulethi is considered a remarkable medicine for solving any kind of throat-related problem. It has anti-biotic, anti-asthmatic characteristics which help in curing sore throat, cough, and other flu-related issues. It is observed that singers prefer consuming Mulethi in the form of powder or tablets as it helps in soothing the throat and reducing the formation of mucus.

HELPS BUILD IMMUNITY : The enzyme that is present in Mulethi is a big immunity booster and keeps infections and bacteria at bay.

It also has properties to kill the cancer cells' growth. There many other health benefits of Mulethi like, regular drink of Mulethi helps in controlling cholesterol levels. Helpful for diabetic patients and a great hair growth stimulant. *For general and specific use of the herb Mulethi, it is advisable to consult the concerned Doctor.*

VIV